दुग्ध सरिता

डेरी विकास का नया आयाम, नया नाम

नवंबर–दिसंबर 2024

देश में राष्ट्रीय दुग्ध दिवस का आयोजन

श्वेत क्रांति 2.0 के लिए अग्रसर भारत

अजमेर डेरी के बढ़ते कदम

डेरी पशुओं का टीकाकरण

www.indiandairyassociation.org

KOTHARI GROUP

SINCE 1975

THE TRUSTED BRAND IN DAIRY INDUSTRY

MILK COOLING TANK OPEN TYPE

Available in 100 to 2500 Ltrs.

MILK COOLING TANK CLOSED TYPE

Available in 1000 to 15000 Ltrs.

KK ALUMINIUM MILKCANS

Available in 5 to 50 Ltrs.

NOVALAC FARM FRES MILK PROCESSOR

Capacity - 2000 Ltr. / day

HEATING VAT MACHINE FOR PANEER & CURD

Heating capacity - 200/300 Ltr./hr

KK SS MILKCANS (AISI 304)

Available in 5 to 50 Ltrs.

RAPID CHILLING SYSTEM

KOTHARI GROUP

- **KK CANS & ALLIED PRODUCTS PVT. LTD.**
- **ASSOCIATED DAIRYFAB PVT. LTD.**

B-5, M.I.D.C., Ajanta Road, Jalgaon - 425003, Maharashtra, India.

Tel. : + 91-257-2211210, 2211700, Fax : +91-257-2210950. E-mail : kotharigroup@kkcans.net

ADF

www.malhar.org

Spreading Healthy Smile - Globally

दुग्ध सरिता

डेरी विकास का नया आयाम, नया नाम

इंडियन डेरी एसोसिएशन द्वारा प्रकाशित द्विमासिक पत्रिका

वर्ष : 8 अंक : 6 नवंबर–दिसंबर, 2024

सम्पादकीय मंडल

अध्यक्ष

डॉ. आर. एस. सोढ़ी
अध्यक्ष, इंडियन डेरी एसोसिएशन

सदस्य

डॉ. रामेश्वर सिंह
पूर्व कुलपति
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
पटना

डॉ. ओमवीर सिंह
उप प्रबंध निदेशक
मदर डेरी फ्रूट्स एंड वेजीटेबल्स
प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली

श्री सुधीर कुमार सिंह
प्रबंध निदेशक
झारखंड दुग्ध उत्पादक सहकारी
महासंघ लिमिटेड, रांची

श्री किरीट मेहता
प्रबंध निदेशक
भारत डेरी, कोल्हापुर

डॉ. बी.एस. बैनीवाल
पूर्व प्राध्यापक
लाला लाजपतराय पशुचिकित्सा
एवं पशु विज्ञान
विश्वविद्यालय, हिसार

डॉ. अर्चना वर्मा
प्रधान वैज्ञानिक
राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान
करनाल

डॉ. अनूप कालरा
सीईओ, आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन
गाजियाबाद

प्रकाशक
श्री हरिओम गुलाटी

संपादक
डॉ. जगदीप सक्सेना

विज्ञापन व व्यवसाय
श्री नरेन्द्र कुमार पांडे

संपर्क

इंडियन डेरी एसोसिएशन, आईडीए हाउस, सैक्टर–IV,
आर. के. पुरम, नई दिल्ली-110022
फोन : 011-26179781
ईमेल : dsarita.ida@gmail.com

विषय सूची

अध्यक्ष की बात, आपके साथ — 8
श्वेत क्रांति 2.0–भारतीय डेरी सेक्टर को नई ऊर्जा
डॉ. आर. एस. सोढ़ी

रिपोर्ट — 11
आईडीए ने देश भर में मनाया राष्ट्रीय दुग्ध दिवस 2024
डॉ. जगदीप सक्सेना

समारोह — 24
राष्ट्रीय दुग्ध दिवस पर भारत की अर्थव्यवस्था में डेरी क्षेत्र के योगदान की सराहना
साभार : प्रेस इंफार्मेशन ब्यूरो, भारत सरकार

परिचय — 27
अजमेर डेरी, सहकारिता व दुग्ध विकास
रामचन्द्र चौधरी

पशु स्वास्थ्य — 33
डेरी पशुओं के संक्रामक रोगों के नियंत्रण के लिए टीकाकरण और टीकाकरण का महत्व
दीपक कुमार व अन्य

कहानी — 36
शरणागत
वृंदावनलाल वर्मा

कविता, कहानी, पशुपालन कैलेंडर और अन्य उपयोगी जानकारी

डिस्क्लेमर

लेखकों द्वारा व्यक्त विचारों, जानकारियों, आंकड़ों आदि के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं, उनसे आईडीए की सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा अन्य सामग्री का कॉपीराइट अधिकार आईडीए के पास सुरक्षित है। इन्हें पुनः प्रकाशित करने के लिए प्रकाशक की अनुमति अनिवार्य है।

मूल्य
एक प्रति : 75 रु.

इंडियन डेरी एसोसिएशन

इंडियन डेरी एसोसिएशन (आईडीए) भारत के डेरी सेक्टर का प्रतिनिधित्व करने वाली शीर्ष संस्था है। सन् 1948 में गठित इस संस्था ने देश को विश्व में सर्वाधिक दूध उत्पादन के शिखर तक पहुंचाने में अग्रणी भूमिका निभायी है। वर्तमान में इसके 3,000 से अधिक सदस्य हैं, जिनमें वैज्ञानिक, विशेषज्ञ, डेरी उद्यमी, डेरी किसान, पशुपालक और डेरी के विभिन्न पहलुओं पर कार्य करने वाले डेरी कर्मी शामिल हैं। आईडीए द्वारा राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तर पर ज्वलंत विषयों पर सम्मेलन, संगोष्ठियां एवं कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं, जिसकी सिफारिशों पर भारत सरकार द्वारा गंभीरता से विचार किया जाता है। आईडीए का मुख्यालय नई दिल्ली में है तथा इसके चार क्षेत्रीय कार्यालय क्रमशः उत्तर, दक्षिण, पूर्व व पश्चिम में कार्यरत हैं। साथ अनेक राज्यों में इसके चैप्टर भी सक्रियता से कार्य कर रहे हैं। डेरी सैक्टर के सभी संबंधितों तक शोध परक व तकनीकी जानकारी और उपयोगी सूचनाओं के प्रसार के लिए आईडीए द्वारा पिछले लगभग सात दशकों से 'इंडियन जर्नल ऑफ डेरी साइंस' और 'इंडियन डेरीमैन' का प्रकाशन किया जा रहा है। ये दोनों ही पत्रिकाएं राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित हैं। द्विमासिक हिन्दी पत्रिका 'दुग्ध सरिता' का प्रकाशन आईडीए की नयी पहल है।

आईडीए के पदाधिकारी

अध्यक्षः डॉ. आर. एस. सोढ़ी

उपाध्यक्षः श्री ए.के. खोसला और श्री अरुण पाटिल

सदस्य

चयनितः श्री सी.पी. चार्ल्स, डॉ. गीता पटेल, श्री रामचंद्र चौधरी, श्री चेतन अरुण नारके, श्री राजेश गजानन लेले, श्री अनिल बर्मन, डॉ. बिमलेश मान, डॉ. बिकाश चंद्र घोष, श्री संजीव सिन्हा, श्री बी.वी.के. रेड्डी, एवरेस्ट इंस्ट्रूमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड और श्री अमरदीप सिंह चड्ढा **नामित सदस्यः** डॉ. जी.एस. राजौरिया, श्री सुधीर कुमार सिंह, डॉ. सतीश कुलकर्णी, डॉ. जे.बी. प्रजापति, डॉ. राहुल सक्सेना, श्रीमती वर्षा जोशी, डॉ. धीर सिंह और श्री एस. राजीव

मुख्य कार्यालयः इंडियन डेरी एसोसिएशन, आईडीए भवन, सेक्टर– IV, आर.के. पुरम, नई दिल्ली– 110022, टेलीफोनः 26170781, 26165237, 26165355, ई–मेलः idahq@rediffmail.com, www.indiandairyassociation.org

क्षेत्रीय, प्रांतीय एवं स्थानीय शाखाएं

दक्षिणी क्षेत्रः डॉ. सतीश कुलकर्णी, अध्यक्ष, आईडीए भवन, एनडीआरआई परिसर, अडुगोडी, बेंगलुरू–560 030, फोन न. 080–25710661, फैक्स–080–25710161. **पश्चिम क्षेत्रः** डॉ. जे.बी. प्रजापति, अध्यक्ष; ए–501, डाइनैस्टी बिजनेस पार्क, अंधेरी–कुर्ला रोड, अंधेरी (पूर्व), मुंबई–400059 ई–मेलः chairman@idawz.org/secretary@idawz.org फोन न. 91 22 49784009 **उत्तरी क्षेत्रः** डॉ. राहुल सक्सेना, अध्यक्ष; आईडीए हाउस, सेक्टर IV, आर.के. पुरम, नई दिल्ली–110 022, फोन– 011–26170781, 26165355. **पूर्वी क्षेत्रः** श्री सुधीर कुमार सिंह, अध्यक्ष, c/o एनडीडीबी, ब्लॉक–डी, डी.के. सेक्टर–II, साल्ट लेक सिटी, कोलकाता– 700 091, फोन– 033–23591884–7. **गुजरात राज्य चैप्टरः** श्री अमित मूलचंद व्यास, अध्यक्ष; c/o एस एम सी कॉलेज ऑफ डेरी साइंस, एएयू कैम्पस, आनंद– 388110, गुजरात। ई–मेलः idagscac @ gmail.com **केरल राज्य चैप्टरः** डॉ. एस.एन. राजाकुमार, अध्यक्ष, c/o प्रोफेसर व अध्यक्ष, केवीएएसयू डेरी प्लांट, मन्नुथी, ई–मेलः idakeralachapter@gmail.com **राजस्थान राज्य चैप्टरः** अध्यक्ष; 418–419, चौथा तल, सन्नी मार्ट, न्यू आतिशी बाजार, जयपुर– 302020 राजस्थान। ई–मेल : idarajchapter @yahoo.com **पंजाब राज्य चैप्टरः** डॉ. इंद्रजीत सिंह, अध्यक्ष; मकान नंबर 1620, सेकटर–80, एस ए एस नगर, मोहाली–140308, पंजाब। ई–मेलः secretaryidapb 2023 @ gmail.com **बिहार राज्य चैप्टरः** श्री डी.के. श्रीवास्तव, अध्यक्ष, c/o पूर्व प्रबंध निदेशक, मिथिला मिल्क यूनियन, हाउस नं. 16, मंगलम एन्कलेव, बेली रोड, सगुना एसबीआई के पास, पटना–814146 बिहार, ई–मेलः idabihar2019@gmail.com **हरियाणा राज्य चैप्टरः** डॉ. एस.के. कनौजिया, अध्यक्ष, c/o डेरी प्रौद्योगिकी प्रभाग, एनडीआरआई, करनाल–132001 (हरियाणा), फोन : 9896782850, ई–मेलः skkanawjia@rediffmail.com **तमिलनाडु राज्य चैप्टरः** श्री कन्ना के.एस. अध्यक्ष; c/o डेरी विज्ञान विभाग, मद्रास वेटेरनरी कॉलेज, वेपेरी, चेन्नई– 600007, तामिलनाडु **आंध्र प्रदेश राज्य चैप्टरः** प्रो.रवि कुमार श्रीभाष्यम, अध्यक्ष; c/o कॉलेज ऑफ डेरी टेक्नोलॉजी, श्री वेंकटेश्वर पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय, तिरुपति–517502 ई–मेलः idaap2020@gmail.com **पूर्वी यूपी स्थानीय चैप्टरः** डॉ. अरविंद, अध्यक्ष; सहायक प्रोफेसर, डेरी विज्ञान एवं खाद्य प्रौद्योगिकी विभाग, कृषि विज्ञान संस्थान, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी– 2210051 फोनः 7007314450 ई–मेलः arvind @bhu.ac.in **पश्चिमी यूपी स्थानीय चैप्टरः** डॉ. अशोक कुमार त्रिपाठी, अध्यक्ष, c/o फ्लैट नंबर 1003/8, ज़ेन स्पायर, रामप्रस्थ ग्रीन्स, वैशाली, गाज़ियाबाद– 201010, उत्तर प्रदेश ई–मेल : ttreddy@ arvinddairy.com **झारखण्ड स्थानीय चैप्टरः** श्री पवन कुमार मारवाह, अध्यक्ष; c/o झारखण्ड दुग्ध महासंघ, एफटीसी कॉम्प्लेक्स, धुर्वा सेक्टर–2, रांची, झारखण्ड–834004 ई–मेलः jharkhandida@gmail.com, डॉ. सतीश कुलकर्णी, **तेलंगाना लोकल चैप्टरः** श्री राजेश्वर राव चालीमेडा, अध्यक्ष; द्वारा डोडला डेरी लिमिटेड कार्पोरेट ऑफिस, # 8-2-293/82/A, 270/Q, रोड नंबर 10-C, जुबली हिल्स, हैदराबाद– 500 003, तेलंगाना

इंडियन डेरी एसोसिएशन

संस्थागत सदस्य

बेनीफैक्टर सदस्य

अल्फा मिल्कफूड्स प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

एग्रीकल्चर स्किल कौंसिल ऑफ इंडिया, गुरूग्राम (हरियाणा)

अजमेर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, अजमेर (राजस्थान)

अपोलो एनीमल मेडिकल ग्रुप ट्रस्ट, जयपुर (राजस्थान)

आयुर्वेट लिमिटेड (दिल्ली)

बीएआईफ डेवलपमेंट रिसर्च फाउंडेशन, पुणे (महाराष्ट्र)

बनासकांठा जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, पालनपुर (गुजरात)

बड़ौदा जिला सहकारिता दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, वडोदरा (गुजरात)

बेनी इमपेक्स प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

बिमल इंड्रस्टीज (हरियाणा)

बेलगावी जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक समिति यूनियन लि., बेलगावी (कर्नाटक)

बिहार राज्य दुग्ध सहकारी संघ लिमिटेड, पटना (बिहार)

सीपी मिल्क एंड फूड प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

क्रीमलाइन डेरी प्रोडक्ट्स लिमिटेड (तेलंगाना)

डोडला डेरी लिमिटेड, हैदराबाद (तेलंगाना)

डिजीवृद्धि टेक्नोलॉजीस प्राइवेट लमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)

ग्लैंबिया इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (कर्नाटक)

डेरी टेक इंडिया, पुणे (महाराष्ट्र)

ड्यूक थॉम्पसन्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (मध्य प्रदेश)

डेरी क्राफ्ट इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, (उत्तर प्रदेश)

ईस्ट खासी हिल्स जिला सहकारी दुग्ध संघ लिमिटेड (मेघालय)

एवरेस्ट इंस्ट्रूमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड, अहमदाबाद (गुजरात)

फूड और बायोटेक इंजीनियर्स (I) प्राइवेट लिमिटेड, पलवल (हरियाणा)

फाउंडेशन फॉर इकोलॉजिकल सिक्योरिटी, आणंद (गुजरात)

फ्लेवी डेरी सॉल्यूशन्स (गुजरात)

फ्रिक इंडिया लिमिटेड (हरियाणा)

फ्रोमाजेरीज़ बेल इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)

जी.आर.बी. डेरी फूड्स प्राइवेट लिमिटेड, होसुर (तमिलनाडु)

गाँधीनगर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, गाँधीनगर (गुजरात)

जीईए प्रौसेस इंजीनियरिंग (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, वडोदरा (गुजरात)

गोमा इंजीनियरिंग प्राइवेट लिमिटेड, ठाणे (महाराष्ट्र)

हसन दुग्ध संघ, हसन (कर्नाटक)

हटसन ऐग्रो प्रोडक्ट्स लि. चेन्नई (तमिलनाडु)

हेरिटेज फूड्स लिमिटेड, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)

हैम्स वेंचर्स एल एल पी (केरल)

आईएफएम इलेक्ट्रोनिक इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

इंडियन इम्यूनोलौजिकल्स लिमिटेड (आंध्र प्रदेश)

जे. एंड के. दुग्ध उत्पादक सहकारिता लिमिटेड (जम्मू)

जयपुर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड (राजस्थान)

जॉन बीन टेक्नोलॉजीस इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (महाराष्ट्र)

जलगांव जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ (महाराष्ट्र)

झारखंड राज्य सहकारी दुग्ध उत्पादक महासंघ लिमिटेड, रांची (झारखंड)

कान्हा दुग्ध परीक्षण उपकरण प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

कोएल्नमेस्से इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (महाराष्ट्र)

कामथ्स ऑवरटाइम्स आइसक्रीम्स प्राइवेट लिमिटेड (महाराष्ट्र)

करीमनगर जिला दुग्ध उत्पादक पारस्परिक सहायता सहकारिता संघ लिमिटेड (आंध्र प्रदेश)

कोल्हापुर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड (महाराष्ट्र)

संस्थागत सदस्य

कर्नाटक सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, बेंगलुरू (कर्नाटक)

कीमिन इंडस्ट्रीज़ साउथ एशिया प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई (तमिलनाडु)

केरल डेरी फार्मर्स वैलफेयर फंड बोर्ड (केरल)

खम्बेते कोठारी कैन्स एवं सम्बद्ध उत्पाद प्राइवेट लिमिटेड, जलगांव (महाराष्ट्र)

कच्छ जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, कच्छ (गुजरात)

क्वालिटी लिमिटेड, पलवल (हरियाणा)

लेहुई इंडिया इंजनियरिंग एंड इक्विपमेंट प्राइवेट लिमिटेड, वडोदरा (गुजरात)

मालाबार रीजनल कोऑपरेटिव मिल्क प्रोड्यूसर्स यूनियन लिमिटेड, कोझिकोड (केरल)

मेसे म्यूनकेन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)

एम एंड बी इंजीनियरिंग लिमिटेड (गुजरात)

मिथिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड (बिहार)

मदर डेरी फ्रूट एंड वेजीटेबल प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)

मुराल्या डेरी प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड (केरल)

मेहसाणा जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक यूनियन लिमिटेड, (गुजरात)

एनसीडीएफआई, आणंद (गुजरात)

नेशनल डेरी डेवलपमेंट बोर्ड, आणंद (गुजरात)

नेचर डिलाइट डेरी एंड डेरी प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड (महाराष्ट्र)

भारतीय खाद्य प्रौद्योगिकी उद्यमशीलता एवं प्रबंधन संस्थान, तंजावुर (निफ्टेम–टी), (तमिलनाडु)

नियोजेन फूड एंड ऐनीमल सिक्योरिटी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, कोच्चि (केरल)

एनडीआरआई ग्रेजुएट्स एसोसिएसन (हरियाणा)

ओलाम फूड इंग्लेडिमेंट्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (हरियाणा)

पराग मिल्क फूड्स लिमिटेड, पुणे (महाराष्ट्र)

पायस मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी प्राइवेट लिमिटेड, जयपुर (राजस्थान)

पाली जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, पाली (राजस्थान)

पतंजलि आयुर्वेद लिमिटेड, हरिद्वार (उत्तराखंड)

प्रॉम्प्ट इक्विपमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड (गुजरात)

पोरबंदर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, पोरबंदर (गुजरात)

रायचूर बेल्लारी एवं कोप्पल जिला सहकारी दुग्ध संघ लिमिटेड, बेल्लारी (कर्नाटक)

राजस्थान सहकारी डेरी संघ लिमिटेड, जयपुर (राजस्थान)

राजस्थान इलेक्ट्रोनिक्स एवं इंस्ट्रूमेंट्स लिमिटेड, जयपुर (राजस्थान)

रेड काऊ डेरी प्राइवेट लिमिटेड, हुगली (पश्चिम बंगाल)

रेप्यूट इंजीनियर्स प्राइवेट लिमिटेड, पुणे (महाराष्ट्र)

रॉकवेल ऑटोमेशन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, नोएडा (उत्तर प्रदेश)

आरपीएम इंजीनियरिंग (I) लिमिटेड, चेन्नई (तमिलनाडु)

आर.के. गणपति चेट्टियार, तिरूपुर (तमिलनाडु)

साबरकांठा जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, हिम्मतनगर (गुजरात)

संजय गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ डेरी टेक्नोलॉजी, पटना (बिहार)

सखी महिला मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी लिमेटेड, अलवर (राजस्थान)

सिंघानिया मिल्क प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड (उत्तर प्रदेश)

सीरैप इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, वडोदरा (गुजरात)

श्री राधे डेरी फार्म एंड फूड्स लिमिटेड, सूरत (गुजरात)

सोलापुर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक व प्रक्रिया संघ मर्यादित (महाराष्ट्र)

साइंटिफिक एंड डिजिटल सिस्टम्स (नई दिल्ली)

श्रेबर डाइनामिक्स डेरीज़ लिमिटेड (महाराष्ट्र)

श्री एडिटिव्स (फार्मा एंड फूड्स) प्राइवेट लिमिटेड, गांधी नगर (गुजरात)

सूरत जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, सूरत (गुजरात)

श्री विजयविशाखा दुग्ध उत्पादक कंपनी लिमिटेड (आंध्र प्रदेश)

श्री महालक्ष्मी डेरी प्राइवेट लिमिटेड, (तमिलनाडु)

स्टीलैप्स टेक्नोलॉजीस प्राइवेट लिमिटेड, बेंगलुरु (कर्नाटक)

एसएसपी प्राइवेट लिमिटेड, फरीदाबाद (हरियाणा)

स्टर्लिंग एग्रो इंडस्ट्रीज लिमिटेड (दिल्ली)

शिव ट्रेडर्स इंस्ट्रूमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड (महाराष्ट्र)

एस. एस. इक्विपमेंट्स (दिल्ली)

द कोयंबटूर डिस्ट्रिक्ट को–ऑपरेटिव मिल्क प्रोड्यूसर्स यूनियन लिमिटेड (तमिलनाडु)

द कृष्णा जिला दुग्ध उत्पादक पारस्परिक सहायता सहकारिता संघ

संस्थागत सदस्य

लिमिटेड, विजयवाड़ा (आंध्र प्रदेश)
द पंचमहल जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)
थर्मोफिशर साइंटिफिक इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (महाराष्ट्र)
उदयपुर दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, (गुजरात)
वैशाल पाटलिपुत्र दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, पटना (बिहार)
वलसाड जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, नवसारी (गुजरात)
विद्या डेरी, आनंद (गुजरात)
विजय डेरी प्रोडक्ट्स, सूरत (गुजरात)

वार्षिक सदस्य

एबीटी इंडस्ट्रीज़, कोयंबटूर (तमिलनाडु)
एसीएस रेफ्रीजरेशन (तमिलनाडु)
अलसफा डेरी मिल्क (तेलंगाना)
उज्जैन सहकारी दुग्ध संघ मर्यादित (म.प्र.)
इंडियन पेरोक्साइड लिमिटेड (यूपी)
इंदौर सहकारी दुग्ध संघ मर्यादित (एमपी)
इंदुजा महिला मिल्क प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड (महाराष्ट्र)
फाल्कन वैक्यूम पम्प्स एंड सिस्टम्स (हरियाणा)
झंडेवालास फूड्स लिमिटेड (राजस्थान)
टेस्टराइट नैनो सिस्टम्स प्राइवेट लिमिटेड, (उत्तर प्रदेश)
बायामेरीयक्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
भरूच जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)
बी.जी चितले डेरी, सांगली (महाराष्ट्र)
भोपाल सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड (मध्य प्रदेश)
सीएचआर हेन्सन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई (महाराष्ट्र)
'कोरोनेशन वर्ष इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (दिल्ली)
कोरबियॉन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (महाराष्ट्र)
गोरमल–वन एलएलपी (महाराष्ट्र)
जामनगर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ (गुजरात)
कैरा जिला सहकारी दूध उत्पादक संघ लिमिटेड (गुजरात)
लोटस डेयरी प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड (राजस्थान)
मैक्स मोबिलिटी प्राइवेट लिमिटेड (पश्चिम बंगाल)
मसकाती डेरी प्रोडक्ट्स लिमिटेड (तेलंगाना)
माओलकेकी फाउंडेशन (मणिपुर)
मॉडर्न डेरीज़ लिमिटेड, करनाल (हरियाणा)
मनिका प्लासटेक प्राइवेट लिमिटेड (महाराष्ट्र)
माही दुग्ध उत्पादक कंपनी लिमिटेड (गुजरात)
मोजरो टेक्नोलॉजीस प्राइवेट लिमिटेड (कर्नाटक)
नैनो इंस्ट्रूमेंट्स (कर्नाटक)
ऑप्टिक्स टेक्नोलॉजी (दिल्ली)
पैकएज इंडस्ट्रीज़ प्राइवेट लिमिटेड (गुजरात)
पूर्णाश्री इक्विपमेंट्स (केरल)
पाल्सगाई इंडिया प्राइवेट लिमिटेड (महाराष्ट्र)
रिवीलेशन्स बायोटेक प्राइवेट लिमिटेड (तेलंगाना)
राजकोट जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड, राजकोट (गुजरात)
सुरेंद्रनगर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ (गुजरात)
सर्वल इंडिया ऐनीमल न्यूट्रीशन प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई (तमिलनाडु)
संगम दुग्ध उत्पादक कंपनी लिमिटेड, गुंटूर (आंध्र प्रदेश)
एसकेएम एनीमल फीड्स एंड फूडस इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, (तमिलनाडु)
स्वदेश मिल्क प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड (उत्तर प्रदेश)
टैवरॉन इंजीनियर्स (तमिलनाडु)
ट्रंस्पोर्ट कार्पोरेशन ऑफ इंडिया (हरियाणा)
वल्लभ मिल्क प्रोडक्ट्स प्राइवेट लिमिटेड (आंध्र प्रदेश)
वास्टा बायोटेक प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई (तमिलनाडु)
वासिस्टा एंटरप्राइज सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड (तेलंगाना)
वीए एक्जिबिशन्स प्रा. लि. (तेलंगाना)
हरबंश डेयरी प्रा. लिमिटेड (यूपी)
श्री नवकार मेटल्स लिमिटेड, (गुजरात)

दीपक अब रजनी जाती रे!

– महादेवी वर्मा

जिनके पाषाणी शापों के
तूने जल जल बंध गलाए
रंगों की मूठें तारों के
खील वारती आज दिशाएँ
तेरी खोई साँस विभा बन
भू से नभ तक लहराती रे
दीपक अब रजनी जाती रे!

लौ की कोमल दीप्त अनी से
तम की एक अरूप शिला पर
तू ने दिन के रूप गढ़े शत
ज्वाला की रेखा अंकित कर
अपनी कृति में आज
अमरता पाने की बेला आती रे
दीपक अब रजनी जाती रे!

धरती ने हर कण सौंपा
उच्छ्वास शून्य विस्तार गगन में
न्यास रहे आकार धरोहर
स्पंदन की सौंपी जीवन रे
अंगारों के तीर्थ स्वर्ण कर
लौटा दे सबकी थाती रे
दीपक अब रजनी जाती रे!

'दुग्ध सरिता' के सदस्य बनें
घर बैठे पत्रिका पाएं

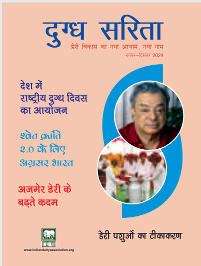

इंडियन डेरी एसोसिएशन का प्रकाशन

दुग्ध सरिता
(द्विमासिक पत्रिका)
अंकों की संख्या : 6
वार्षिक सदस्यता शुल्क रु. 450/–
कीमत रु. 75/– प्रति अंक
साधारण डाक से निःशुल्क डिलीवरी, कोरियर या रजिस्टर्ड डाक का शुल्क रु. 50/– प्रति अंक

दुग्ध सरिता : देश में डेरी सेक्टर का विकास आईडीए का मिशन है और इसके लिए हिंदी भाषा में डेरी किसानों को लक्ष्य करते हुए इस द्विमासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया गया है। यह पत्रिका डेरी सेक्टर के सभी संबंधितों की एक बड़ी मांग और जरूरत पूरी करती है। 'दुग्ध सरिता' डेरी किसानों की समस्याओं और मुद्दों पर केंद्रित है और संबंधित सरकारी योजनाओं की जानकारी भी प्रदान करती है।

'दुग्ध सरिता' की 4,000 या अधिक प्रतियां प्रकाशित की जा रही हैं। इसे सहकारी समितियों और निजी डेरी सेक्टर के संस्थागत सदस्यों सहित आईडीए के सभी सदस्यों, शैक्षणिक संस्थानों और सभी संबंधित सरकारी विभागों को प्रेषित किया जा रहा है। इसके माध्यम से नई तकनीकों, सर्वोत्तम दूध प्रक्रियाओं, डेरी प्रसंस्करण और आधिक दूध उत्पादन सहित सभी पहलुओं पर जानकारी प्रदान की जा रही है। 'दुग्ध सरिता' में लेख, समाचार व विचार, केस स्टडीज, सफलता गाथाएं, फोटो फीचर तथा अन्य उपयोगी सामग्री प्रकाशित की जाएगी। इसका उद्देश्य डेरी पशुओं के पालन से लेकर दूध उत्पादन, परिवहन, प्रसंस्करण तथा बिक्री के सभी आयामों को शामिल करते हुए डेरी किसानों और डेरी व्यवसाय को प्रगति तथा उन्नति के पथ पर अग्रसर करना है।

आईडीए द्वारा 'इंडियन डेरीमैन' और 'इंडियन जर्नल ऑफ डेरी साइंस' नामक दो अन्य पत्रिकाओं का प्रकाशन भी किया जाता है, जो राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित हैं।

— — — — — — — — — — — — — — — — — — — —

सदस्यता फार्म

हाँ, मैं सदस्य बनना चाहता हूं :
दुग्ध सरिता विवरण.. /एक वर्ष/दो वर्ष/ तीन वर्ष/ प्रतियों की संख्या [ ]
(कृपया 'टिक' करें)

पत्रिका भेजने का पता (अंग्रेजी में लिखें तो कैपिटल लैटर प्रयोग करें)
संस्थान / व्यक्ति का नाम..
संपर्क व्यक्ति का नाम व पदनाम (संस्थान सदस्यता के लिए)..
पता..
शहर..
राज्य..पिन कोड..ई–मेल..
फोन..मोबाइल..
संलग्न बैंक ड्राफ्ट/स्थानीय चेक (ऐट पार) नं...
बैंक..इंडियन डेरी एसोसिएशन, नई दिल्ली को देय
एनईएफटी विवरण (ट्रांसैक्शन आईडी..तारीख..राशि..)

(हस्ताक्षर)

कृपया इस फॉर्म को भरकर डाक से भेजें या ई–मेल करें।
सेक्रेटरी (ऐस्टेबलिशमेंट), इंडियन डेरी एसोसिएशन, आईडीए हाउस, सेक्टर–IV आर. के. पुरम, नई दिल्ली–110022
फोन : 26179781, 26170781 ईमेल : **dsarita.ida@gmail.com** वेबसाइट : **www.indiandairyassociation.org**

एनईएफटी विवरण : खाता नाम : इंडियन डेरी एसोसिएशन बचत खाता संख्या : 90562170000024 आईएफएससी : **CNRB0019009**
बैंक : केनरा बैंक ; शाखा; दिल्ली तमिल संगम बिल्डिंग, सेक्टर V आर. के. पुरम, नई दिल्ली–110022

अध्यक्ष की बात, आपके साथ

श्वेत क्रांति 2.0-भारतीय डेरी सेक्टर को नई ऊर्जा

भारतीय डेरी उद्योग की गौरवशाली यात्रा की समीक्षा करें तो इसमें डॉ. वर्गीज़ कुरियन के दूरदर्शी नेतृत्व में 1970 के दशक के पूर्वार्ध मे शुरू की गयी श्वेत क्रांति या 'ऑपरेशन फ्लड' की परिवर्तनकारी भूमिका स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इस अभियान ने भारत को दूध के अभाव वाले देश से विश्व का सबसे बड़ा दूध–उत्पादक बना दिया और करोड़ों छोटे डेरी किसानों की आजीविका में सार्थक सुधार किया। आज हम श्वेत क्रांति 2.0 की कगार पर हैं। इसके अतंर्गत सतत् विकास, उत्पादकता में सुधार और डेरी किसानों के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए डेरी सेक्टर की संपूर्ण संभावनाओं पर नये सिरे से जोर दिया जा रहा है।

प्रथम श्वेत क्रांति की बुनियाद सहकारिताओं के विकास और दूध उत्पादन में वृद्धि के आधार पर रखी गई थी। जबकि श्वेत क्रांति 2.0 का ताना–बाना नये ज़माने की आवश्यकताओं और उपलब्ध बुनियादी सुविधाओं के गिर्द बुना जा रहा है, जैसे आधुनिक प्रौद्योगिकी, जलवायु परिवर्तन की चुनौती, और विभिन्न डेरी उत्पादों की तेजी से बढ़ती बाजार मांग आदि। श्वेत क्रांति 2.0 के अभियान को राज्य सरकारों, नेशनल डेरी डेवलपमेंट बोर्ड (एनडीडीबी) और डेरी प्रोसेसिंग एंड इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट फंड (डीपीआईडीएफ) द्वारा समर्थन और सहायता प्रदान की जा रही है। इस दूसरे चरण के अंतर्गत पशु उत्पादकता में ठहराव, उपभोक्ताओं की बदलती प्राथमिकताओं और सतत् विकास जैसी नयी चुनौतियों के समाधान पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

हमारा लक्ष्य एक ओर भारत को विश्व में दूध उत्पादन में अग्रणी बनाये रखना है, तो दूसरी ओर यह सुनिश्चित भी करना है कि हमारे डेरी उद्योग का सतत् विकास हो और वो शहरी तथा स्वास्थ्य के प्रति जागरूक आबादी की नयी आवश्यकताओं को पूरा कर सके।

श्वेत क्रांति 2.0 के मुख्य कार्य क्षेत्र

उत्पादकता में सुधार

श्वेत क्रांति 2.0 का एक उद्देश्य डेरी पशुओं की उत्पादकता में वृद्धि करना है, जो डेरी सेक्टर की एक प्रमुख चुनौती है। हमें आशा है कि उन्नत प्रजनन तकनीकों, जैसे कृत्रिम गर्भाधान और जीनोम चयन, के साथ पशु पोषण में सुधार करके मांग और आपूर्ति के बीच के अंतर को सतत् रूप से कम किया जा सकता है। उच्च गुणवत्ता वाले आहार (फीड) की उपलब्धता को आसान बनाकर और पशु स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार करके दूध की गुणवत्ता और उत्पादन, दोनों में सुधार किया जा सकता है।

प्रौद्योगिकी का उपयोग

आज के तेजी से विकसित हो रहे विश्व में डिजिटल नवाचारों को डेरी प्रक्रियाओं के साथ समेकित करना आवश्यक है। डेटा ऐनालिटिक्स, स्वास्थ्य निगरानी के मोबाइल ऐप्स और डेरी प्रबंधन के एआई–संचालित समाधान जैसे तकनीकी उपाय अपनाकर डेरी प्रक्रियाओं का आधुनिकीकरण किया जा रहा है। इन तकनीकी उपायों को अपनाकर डेरी किसान उचित निर्णय ले सकेंगे, जिससे उत्पादकता और लाभदायकता में सुधार होगा।

जलवायु–अनुकूल प्रक्रियाएँ

डेरी उद्योग को सतत् बनाना श्वेत क्रांति 2.0 का एक मुख्य आधार है। जलवायु परिवर्तन भारतीय कृषि और डेरी के लिए एक गंभीर जोखिम है। इसलिए मीथेन उत्सर्जन और पानी की खपत में कमी लाने तथा जलवायु अनुकूल डेरी प्रक्रियाओं

को प्रोत्साहन देने के लिए आवश्यक कदम उठाये जा रहे हैं। जैविक चारे के उत्पादन को प्रोत्साहन देने और व्यर्थ प्रबंधन प्रणालियों में सुधार करने से पर्यावरण संरक्षण में मदद मिलेगी और किसानों के लिए आमदनी के नये अवसर भी उत्पन्न होंगे।

किसानों का सशक्तिकरण और समावेश

श्वेत क्रांति 2.0 के अंतर्गत डेरी किसानों का सशक्तिकरण एक प्रमुख क्षेत्र है, और इसमें भी महिलाओं को प्रमुखता दी जा रही है, क्योंकि देश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में इनकी अहम् भूमिका है। सहकारिताओं का सशक्तिकरण, वित्तीय समावेश का प्रसार, प्रशिक्षण तथा बुनियादी संरचनाओं तक पहुंच को सुनिश्चित करने से आज के बदलते परिवेश में डेरी किसानों को प्रगति करने के अवसर मिलेंगे। इसके साथ ही मूल्य–सवंर्धित डेरी उत्पादों, जैसे चीज़, योगर्ट और पुष्टीकृत दूध, के उत्पादन को प्रोत्साहन देने से स्थानीय और वैश्विक, दोनों ही बाजारों में व्यापार के नये अवसर उत्पन्न होंगे।

इंडियन डेरी एसोसिएशन (आईडीए) के अध्यक्ष के रूप में मैं श्वेत क्रांति 2.0 को एक परिर्वतनकारी कदम की तरह देखता हूं। भारत के कृषि जीडीपी (सकल घरेलू उत्पाद) में डेरी सेक्टर का योगदान लगभग एक–तिहाई है, परंतु अभी भी इसकी पूरी संभावनाओं का उपयोग नहीं हुआ है। पहली श्वेत क्रांति को गति देने वाले सहकारिता के विचार के साथ वर्तमान प्रौद्योगिक नवाचारों का समावेश करके हम भारत के लाखों डेरी किसानों के लिए एक अधिक सतत्, लचीले और लाभदायक डेरी उद्योग का विकास कर सकते हैं।

सतत्ता को सुनिश्चित करना, उद्यमिता को सहायता देना, और पर्यावरण का संरक्षण करना श्वेत क्रांति 2.0 की सफलता की कुंजी हैं। इन प्रयासों के माध्यम से हम भारतीय डेरी सेक्टर को उत्पादकता और सतत्ता, दोनों ही संदर्भों में अग्रणी वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित करना चाहते हैं।

हम सब मिलकर श्वेत क्रांति 2.0 को भारत के ग्रामीण आर्थिक विकास और खाद्य सुरक्षा की आधारशिला बना सकते हैं। इस तरह सभी के लिए एक समृद्ध और सतत् भविष्य सुनिश्चित हो सकेगा।

उत्पाद की कीमतों का डेरी किसानों पर प्रभाव

एसएमपी (स्किम्ड मिल्क पाउडर) जैसे उत्पादों की बाजार कीमत का संपूर्ण डेरी सेक्टर की गतिविधियों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। जब एसएमपी की कीमतें गिरती हैं, तो बाजार के रुख पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, जिससे दूध, मक्खन और अन्य डेरी उत्पादों की कीमतें प्रभावित होती हैं। परिणामस्वरूप, डेरी किसानों को मिलने वाली कच्चे दूध की कीमत पर भी प्रभाव पड़ता है। वास्तव में इस समय कच्चे दूध की कीमतें पिछले साल की तुलना में कम हैं, और इसका मुख्य कारण यह है कि बाजार में एसएमपी की कीमतें गिरी हुई हैं। कीमतों में यह कमी ऐसे समय पर आई है, जब डेरी किसान लागतों की कीमतों में उतार–चढ़ाव और बाजार की अनिश्चितताओं से त्रस्त हैं।

सौभाग्य से वर्तमान में पशु आहार के कीमतों में आई कमी से डेरी किसानों को कुछ राहत मिली है, इससे दूध उत्पादन की लागत में गिरावट आई है। परंतु, यह राहत अस्थायी है, क्योंकि मुख्य मुद्दा उत्पाद की कीमत में होने वाला तेज उतार–चढ़ाव है, जिसपर तुरंत ध्यान देने की आवश्यकता है। यदि ऐसा नहीं किया गया तो डेरी उद्योग पर दीर्घकालिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ने का जोखिम है।

यदि एसएमपी के विशाल भंडार की समस्या का तुरंत समाधान नहीं किया गया तो कीमतों में कमी की परेशानी निरंतर बनी रहेगी और किसानों को नुकसान होगा। इस भंडार का शीघ्रता और कुशलता से उपयोग करने से बाजार को स्थायित्व देने में सहायता मिलेगी। इससे डेरी किसानों और डेरी प्रसंस्करण का उद्यम करने वालों को बेहतर कीमतें मिल सकेंगी। यदि ऐसा नहीं किया गया तो कीमतों में तेजी का दौर जारी रहेगा, और इससें डेरी किसानों और डेरी प्रसंस्करण का उद्यम करने वालों को नुकसान झेलना पड़ेगा, जो पहले से ही उत्पादन की कीमत बढ़ने से त्रस्त हैं।

इस संदर्भ में नीतिगत बफ़र भंडार की अहम् भूमिका है। अमेरिका और अनेक युरोपीय देशों में एसएमपी, मक्खन और चीज़ सहित अनेक डेरी उत्पादों के बफ़र भंडार की एक सुनियोजित प्रक्रिया है। इन प्रक्रियाओं के पालन से बाजार को स्थायित्व मिलता है। साथ ही आवश्यकता से अधिक आपूर्ति या बाजार असंतुलन की दशा में डेरी किसान बाजार के उतार–चढ़ाव से सुरक्षित रहते हैं।

आईडीए–विश्व डेरी शिखर सम्मेलन 2024 में टीम आईडीए की भागीदारी और प्रतिनिधित्व

पेरिस में 15–18 अक्टूबर 2024 के दौरान आयोजित आईडीएफ–विश्व डेरी शिखर सम्मेलन 2024 में भागीदारी करना हमारे लिए गौरवशाली घटना रही। यहां डेरी सेक्टर के अनेक वैश्विक प्रमुख विश्व भर में डेरी के भविष्य और सततता पर विचार–विमर्श करने के लिए एक मंच पर आये थे। इस मंच पर विश्व भर से आये नीति निर्माता, डेरी उद्योग विशेषज्ञ और संबंधित उपस्थित थे, जिनके साथ भारत के नवाचारों और योगदानों को साझा करना हमारे लिए एक विशेष अवसर रहा। साथ ही हमें अन्य देशों से सीखने का अवसर भी मिला।

मुझे यह बताने में बहुत गर्व है कि शिखर सम्मेलन में भारतीय डेरी संगठनों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए तीन प्रतिष्ठित पुरस्कार जीते। इससे डेरी सेक्टर की सततता और नवाचार के प्रति देश की प्रतिबद्धता का स्पष्ट संकेत मिलता है। हमने सहकारिता के मॉडल के माध्यम से छोटे किसानों के सशक्तिकरण के प्रति भी प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। इस संदर्भ में तीन भारतीय संगठन अपने नवाचारों के लिए विशेष रूप से उल्लेखनीय रहे :

* अमूल डेरी : सतत् डेरी फार्मिंग प्रक्रियाओं में नवाचार–पशुओं की देखरेख,
* सुंदरवन सहकारी दुग्ध एवं पशु उत्पादन यूनियन लिमिटेड : सामाजिक–आर्थिक डेरी फार्मिंग प्रक्रियाओं में नवाचार, और
* आशा महिला दुग्ध उत्पादक कंपनी लिमिटेड : सतत् प्रसंस्करण में नवाचार

डेरी शिखर सम्मेलन में 18 अक्टूबर को सततता पर आयोजित 'डेरी लीडर्स फोरम' में मेरी भागीदारी मेरे लिए शिखर सम्मेलन की प्रमुख उपलब्धि रही। इस मंच के माध्यम से मुझे वैश्विक समुदाय को संबोधित करने का अवसर मिला, जहां मैंने डेरी सेक्टर में सततता के लिए भारत के समग्र दृष्टिकोण और रणनीति को प्रस्तुत किया, और इसमें मैंने भारतीय डेरी उद्योग के विशेष संदर्भ में चर्चा की। मेरे भाषण का मुख्य विषय 'सततता पर सामूहिक प्रयास की शक्ति' था।

मैंने इस तथ्य पर जोर दिया कि भारत की डेरी सप्लाई चेन में 300 मिलियन मवेशी और भैंसें शामिल हैं, जिनसे 80 मिलियन छोटे डेरी किसानों को आजीविका प्राप्त होती है। साथ ही इस व्यापक नेटवर्क में 10 मिलियन फुटकर विक्रेता भी शामिल हैं। यह विकेंद्रित, परंतु आपस में कड़ी–दर–कड़ी जुड़ी प्रणाली, 1.42 बिलियन भारतीयों को कम कीमत पर पोषण उपलब्ध कराने में सक्षम है। यह महत्वपूर्ण उपलब्धि पर्यावरण अनुकूल और सतत् रूप से प्राप्त की गयी है। छोटे किसानों पर आधारित भारत की डेरी प्रणाली सततता से जुड़े तीन लक्ष्यों को पूरा करने में सहायता करती है – पुर्नचक्रण, अक्षय ऊर्जा और कार्बन उत्सर्जन में कमी।

मैंने जोर देकर यह भी कहा कि पर्यावरण अनुकूलता के लिए अधिकतम प्रयास आवश्यक हैं, परंतु हमें यह भी याद रखना होगा कि सततता तभी शुरू हो सकती है, जब लोग भूखे ना हों, उनके पेट भरें हों। इसलिए वैश्विक डेरी उद्योग को 'आजीविका–उत्सर्जन बनाम विलासिता–उत्सर्जन' के मुद्दे पर कार्य करना और सोचना होगा।

शिखर सम्मेलन में जारी 'आईडीएफ वर्ल्ड डेरी सिचुएशन रिपोर्ट 2024' में डेरी उत्पादन, व्यापार और कीमतों पर वैश्विक रुख प्रस्तुत किया गया है, और इसमें ऐसी अनेक चुनौतियां स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही हैं, जिनका हम घरेलू स्तर पर सामना कर रहे हैं। शिखर सम्मेलन में जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में सततता पर जोर दिया गया, और यह रणनीति हमारे श्वेत क्रांति 2.0 के अभियान को भी गति दे रही है।

(आर. एस. सोढ़ी)

रिपोर्ट

आईडीए ने देश भर में मनाया राष्ट्रीय दुग्ध दिवस 2024

प्रस्तुतिः डॉ. जगदीप सक्सेना

संपादक, दुग्ध सरिता, इंडियन डेरी एसोसिएशन, नई दिल्ली

आईडीए अध्यक्ष डॉ. आर. एस. सोढ़ी द्वारा आईडीए–पश्चिम क्षेत्र कार्यालय से वर्चुअल संबोधन

भारत में प्रत्येक वर्ष 26 नवंबर का दिन राष्ट्रीय दुग्ध दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन 1921 में श्वेत क्रांति के जनक डॉ. वर्गीज़ कुरियन का केरल के कोझिकोड में जन्म हुआ था। उनके निर्देशन में 13 जनवरी, 1970 को 'ऑपरेशन फ्लड' नाम से एक महाभियान शुरू किया गया था। इसका उद्देश्य देश को दूध उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाना और पोषण सुरक्षा की ओर अग्रसर करना था। डॉ. कुरियन के नेतृत्व और प्रयासों से हमने इस उद्देश्य को पूरा किया और 1998 में अमेरिका से आगे निकलकर भारत विश्व में सर्वाधिक दूध उत्पादन करने वाला देश बन गया। यह गौरवशाली कीर्तिमान आज भी बना हुआ है। देश के अग्रणी डेरी संगठन के रूप में इंडियन डेरी एसोसिएशन (आईडीए) के प्रयासों से भारत सरकार ने डॉ. कुरियन के जन्मदिन, 26 नवंबर, को राष्ट्रीय दुग्ध दिवस

आईडीए मुख्यालय में राष्ट्रीय दुग्ध दिवस का आयोजन

के रूप में मनाने की घोषणा की। वर्ष 2014 को पहला राष्ट्रीय दुग्ध दिवस मनाया गया। तब से भारत सरकार सहित देश की अनेक डेरी संस्थाएं प्रत्येक वर्ष यह दिवस उत्साह के साथ मनाती हैं, अनेक कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। प्रस्तुत है इन विशेष आयोजनों पर एक संक्षिप्त रिपोर्ट।

इंडियन डेरी एसोसिएशन (आईडीए) के नई दिल्ली स्थित मुख्यालय में 26 नवंबर को राष्ट्रीय दुग्ध दिवस के अवसर एक विशेष चर्चा सत्र आयोजित किया गया। गणमान्य अतिथियों ने आईडीए के पदाधिकारियों तथा प्रतिष्ठित विशेषज्ञों की उपस्थिति में दीप प्रज्ज्वलित कर समारोह का उद्घाटन किया। प्रोफेसर (डॉ.) राकेश मोहन जोशी, कुलपति, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ फॉरेन ट्रेड, समारोह के मुख्य अतिथि थे, जबकि डॉ. विजय सरदाना, टेक्नो–लीगल एक्सपर्ट और श्री कुलदीप शर्मा, संस्थापक, सुरुचि कंसल्टेंट्स ने माननीय अतिथियों के रूप में समारोह में भागीदारी की। आईडीए के अध्यक्ष डॉ. आर. एस. सोढ़ी ने मुंबई स्थित आईडीए–पश्चिम क्षेत्र के कार्यालय से वर्चुअल मोड में अपना मुख्य भाषण (कीनोट ऐड्रेस) प्रसारित किया। इसमें आईडीए की देश भर में फैली शाखाओं में उपस्थित सदस्यों ने भी भागीदारी की। समारोह में उपस्थित सभी अतिथियों और सदस्यों ने डॉ. कुरियन को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि उनमें नेतृत्व की असाधारण क्षमता के साथ एक दूरदृष्टि भी थी, जिसके आधार पर उन्होंने विश्व प्रसिद्व 'ऑपरेशन फ्लड' और श्वेत क्रांति की रूपरेखा तैयार की, और इसे सफल भी बनाया। उन्होंने बताया कि 1982 से 2012 तक मैंने उनके साथ कार्य किया और बहुत कुछ सीखा। डॉ. कुरियन का मानना था कि प्रत्येक 25 वर्ष में दूध का उत्पादन तिगुना किया जा सकता है। वह अपने कार्यकलाप में सदैव सर्वोत्तम विकल्प चुनते थे, और सहकारिताओं पर उनका अगाध विश्वास था। गुणवत्तापूर्ण दूध और दूध उत्पादों को आम जनता तक पहुँचाने की योजनाओं में डॉ. कुरियन किसानों के हित के साथ उपभोक्ताओं के हित को भी सर्वोपरि रखते थे। आपॅरेशन फ्लड के दौरान उन्हेंने बड़ी संख्या में युवा पेशेवरों को पूरी जिम्मेदारी, जवाबदेही और काम करने की आजादी के साथ नियुक्त किया। अपने दूरदर्शी नजरिये के कारण डॉ. कुरियन ने अनेक सदाबहार और विश्वस्तरीय संस्थानों की नींव रखी और इन्हें कामयाबी के शिखर पर पहुंचाया। इसमें अमूल, एनडीडीबी, आईडीएमसी, 'इरमा', एनसीडीएफआई और इंडियन इम्यूनोलॉजिकल्स प्रमुख हैं। अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने केएमएफ, मिल्मा, सरस, सुधा, वीटा, वर्का और सांची जैसी 26 से अधिक सहकारी संस्थाओं की स्थापना की और इनके विकास के लिए कार्य किया। संस्थाओं की नींव रखने, उनमें कुशल व योग्य व्यक्तियों को जोड़ने, और विकास की रूपरेखा व रणनीति बनाने में डॉ. कुरियन सिद्वहस्त थे।

आईडीए–पश्चिम क्षेत्र में राष्ट्रीय दुग्ध दिवस समारोह

डॉ. कुरियन को श्रद्धांजलि अर्पित

डॉ. कुरियन को सभी व्यवसायियों, उद्यमियों और सहकारिताओं द्वारा उनके अत्यंत प्रभावी व्यवसायिक मॉडल के लिए याद किया जाता है। उनका कहना था कि डेरी किसान को उसके उत्पाद की अधिक कीमत दो, जबकि उपभोक्ता को गुणवत्तापूर्ण, स्वादिष्ट और पोषक उत्पाद उचित कीमत पर उपलब्ध कराओ। यदि किसान और उपभोक्ताओं, दोनों के हितों की रक्षा की जाएगी, तो सप्लाई चेन में कभी बाधा नहीं आएगी। भारत के लिए उनका सप्लाई चेन मॉडल विश्व के सर्वश्रेष्ठ मॉडल्स में से एक है, और इसकी नकल करना बहुत कठिन है। डॉ. सोढ़ी ने कहा कि हम सभी को किसी परियोजना की रूपरेखा बनाने और इसे सफलतापूर्वक लागू करने के लिए डॉ. कुरियन के अनुभवों की सीख लेनी चाहिए। भारत की व्यवसायिक अर्थव्यवस्था छोटे उत्पादकों, छोटे व्यापारियों और छोटे उपभोक्ताओं पर निर्भर है। इसलिए यहाँ सहकारी व्यवसायिक मॉडल सफल हैं। डॉ. कुरियन ने सदैव श्रमिकों के कार्य की सराहना की और महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए कार्य किया। डॉ. सोढ़ी ने कहा कि हम उनके प्रयासों के कारण ही आज 140 करोड़ भारतीयों को पोषण सुरक्षा देने में सफल रहे हैं। उनके द्वारा स्थापित मूल्यों और संदेशों को डेरी समुदाय के बीच प्रसारित करके भी हम डॉ. कुरियन को स्मरण कर सकते हैं। डॉ. सोढ़ी ने मुख्य अतिथि, माननीय अतिथियों और सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया और भागीदारी के लिए आभार व्यक्त किया।

आईडीए के उपाध्यक्ष श्री ए.के. खोसला ने अपने संबोधन में डॉ. कुरियन को स्मरण करते हुए कहा कि उन्होंने देश में सहकारिता की नींव रखी और इसके विकास को गति देने में अहम् भूमिका निभायी। 'ऑपरेशन फ्लड' कार्यक्रम के माध्यम से उन्होंने डेरी किसानों का सशक्तिकरण किया और भारत के डेरी उद्योग को वैश्विक पटल पर एक नयी पहचान और स्थान दिलाया। डॉ. कुरियन ने छोटे डेरी किसानों और महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए कार्य किया और उनकी आमदनी बढ़ायी। उनके प्रयासों से ग्रामीण भारत के सामाजिक–आर्थिक बदलाव में डेरी की एक महत्वपूर्ण भूमिका स्थापित हुई हैं।

डॉ. कुरियन द्वारा सुझायी गयी रणनीति पर आगे बढ़ते हुए भारतीय डेरी उद्योग ने अपनी वैश्विक पहचान बनायी है। पेरिस में आयोजित आईडीए डेरी समिट 2024 में भारतीय डेरी संस्थानों द्वारा जीते गये तीन प्रतिष्ठित पुरस्कार इसके प्रमाण हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर डेरी सेक्टर के विकास में एक ठहराव दिखाई दे रहा है, जबकि भारतीय डेरी सेक्टर की बृद्धि प्रतिशत दर प्रभावशाली है। इसीलिए भारत को अकसर 'विश्व की डेरी' भी कहा जाता हैं।

राष्ट्रीय पशुधन डिजिटल मिशन के अंतर्गत पशुपालन एवं डेरी विभाग तथा एनडीडीबी द्वारा भारत में लिंग चयनित वीर्य (सेक्स सॉर्टेड सीमन) उपलब्ध कराया जा रहा है। लगभग 75 प्रतिशत पशुधन आबादी को 'डिजिटाइज़' किया जा चुका है। एक 'यूनिफाइड जीनोमिक चिप' विकसित की गयी है, जो नर पशुओं के गुणों और गुणवत्ता से परिचित कराती है। इस तरह डेरी किसान उत्तम गुणों वाले सांड के वीर्य का चयन करके बेहतर उत्पादकता प्राप्त कर सकते हैं।

भारतीय डेरी सेक्टर में अपने असंगठित क्षेत्र को संगठित क्षेत्र में बदलने की अपार संभावनाएं और अवसर हैं। अभी लगभग 63 प्रतिशत भाग असंगठित है, और शेष 37 प्रतिशत संगठित क्षेत्र में निजी तथा सहकारी (सरकारी सहित) संस्थाओं की लगभग बराबरी की हिस्सेदारी है। संगठित क्षेत्र में जितनी वृद्धि होगी, डेरी सेक्टर में उतना ही अधिक विकास

आईडीए–दक्षिण क्षेत्र में महिला डेरी किसान का सम्मान

आईडीए–उत्तर क्षेत्र में राष्ट्रीय दुग्ध दिवस समारोह

होगा। नये उद्यमी और स्टार्टअप्स दूध को सीधे डेरी फार्म से घर तक पहुंचा रहे हैं। प्रत्येक 25 वर्ष के चक्र में दूध का उत्पादन तिगुना हो जाता है, इस रुख के अनुसार हमें 2047 के लिए तैयार रहना चाहिए।

मुख्य अतिथि प्रोफेसर आर. एम. जोशी ने अपने संबोधन में डॉ. वर्गीज़ कुरियन को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि उनके अमूल्य योगदान के कारण आज भारत विश्व में सबसे अधिक दूध उत्पादन करने वाला देश है, परंतु डेरी निर्यात में हम बहुत पीछे हैं। न्यूजीलैंड का कुल दूध उत्पादन केवल 21.6 मिलियन टन है, परंतु यह देश डेरी उत्पादों का सबसे बड़ा निर्यातक है। अभी तक हमें एफडीए के नियमों के कारण संरक्षण मिला हुआ है। इस संदर्भ में डॉ. सोढ़ी ने एक वैश्विक मंच पर बिल्कुल सही कहा था कि 80 मिलियन से अधिक छोटे और सीमांत डेरी किसान भारतीय डेरी सेक्टर से जुड़े हुए हैं, और हमें इनकी आजीविका तथा पोषण सुरक्षा की रक्षा करनी है। अभी तक भारत सरकार डेरी सेक्टर को संरक्षण देने में सफल रही है, परंतु यह स्थिति कब तक रहेगी, कहना कठिन है क्योंकि अंतरराष्ट्रीय दबाव निरंतर बढ़ रहा है। इसलिए बेहतर यह होगा कि हम खुद को अंतरराष्ट्रीय बाजार में प्रतिस्पर्धा के योग्य बनाएं। इसके लिए हमें निर्यात के अनुकूल गुणवत्ता बनानी होगी और डेरी उत्पादों की कीमतों को भी प्रतिस्पर्धी बनाना होगा। निर्यात के लिए तैयारी करने में हमें गुणवत्ता, 'ट्रेसेबिलिटी', कार्बन फुटप्रिंट और सततता जैसे मुद्दों पर ध्यान देना होगा।

अमेरिका की तुलना में युरोप में नियमन संबंधी परिवेश अधिक कठोर है। डेरी उत्पादों के निर्माण में हमें भी युरोप की तरह नवाचारी बनना होगा, जहां कई किस्म के चीज़ बनाये जाते हैं। हमें इस दिशा में कार्य करना होगा। हमें गुणवत्ता और विविधता, दोनों पर ध्यान देना है। बादाम–दूध और वीगन उत्पाद जैसे डेरी विकल्प डेरी सेक्टर के लिए चुनौती बन गये हैं। हमें अपने उपभोक्ताओं को डेरी विकल्पों और वीगन उत्पादों की तुलना में डेरी उत्पादों के लाभों के प्रति अधिक जागरूक करना होगा। यह आत्मनिरीक्षण का समय है। डॉ. सोढ़ी के नेतृत्व में आईडीए को इन सभी पहलुओं पर नज़र रखनी और ध्यान देना चाहिए, ताकि डेरी सेक्टर का सतत् विकास हो और करोड़ों डेरी किसानों के हितों की रक्षा हो सके।

माननीय अतिथि डॉ. विजय सरदाना ने अपने संबोधन में डेरी सेक्टर में आहार (फीड) और चारे की समस्या का उल्लेख करते हुए कहा कि इस विषय पर आईडीए को एक राष्ट्रीय नीति बनाने की आवश्यकता है। डेरी उद्योग के विकास के लिए आवश्यक है कि डेरी फार्मिंग में आदानों यानी इनपुट्स की लागत को कम से कम रखा जाए। यदि कीमतें लगातार बढ़ती रहेंगी तो डेरी विकल्पों को बाजार में जगह बनाने का अवसर मिल जाएगा। दूसरी ओर, 'पेटा' जैसे संगठन आम उपभोंक्ताओं के बीच दूध ना पीने का प्रचार कर रहे हैं। हमें उपभोंकताओं को बताना होगा कि गाय/भैंस का दूध निकालकर हम उसके बच्चे को दूध से वंचित नहीं कर रहे हैं, उसे पर्याप्त दूध पोषण के लिए उपलब्ध रहता है। केवल बचा हुआ दूध मानव उपभोग में लाया जाता है। इससे पशु का स्वास्थ्य उत्तम बना रहता है। इस तथ्य को उपभोक्ताओं के घर–घर तक पहुंचाने के लिए आईडीए को नेतृत्व करना चाहिए। उपभोक्ताओं के दबाव और नई प्रौद्योगिकी के उपयोग के कारण खाद्य नियमों व कानूनों में बदलाव की आवश्यकता है। इसके लिए हमें एफएसएसएआई की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए। खाद्य संबंधी कानूनों में लेबलिंग, संघटन, फार्मुलेशन, ऐडिटिव्स आदि पहलुओं का समावेश होना चाहिए।

आईडीए–पंजाब राज्य चैप्टर में राष्ट्रीय दुग्ध दिवस का आयोजन

आईडीए–पूर्व क्षेत्र में डॉ. कुरियन को नमन

अंतरराष्ट्रीय दबाव के कारण भारतीय डेरी उत्पादों के बाजार को वैश्विक व्यवसाय के लिए खोलना अनिवार्य हो जाएगा। इसलिए हमें डेरी उत्पादों की गुणवत्ता को निर्यात–अनुकुल बनाना होगा। साथ ही डेरी फार्मिंग से जुड़े सभी कार्यकलापों में उन्नत प्रौद्योगिकी का उपयोग भी करना होगा। शेल्फ लाइफ़ बढ़ाने, स्वाद को सभी की पसंद का बनाने, डिलीवरी प्रणाली को बेहतर बनाने और ई–कॉमर्स को अपनाने जैसे पहलुओं पर भी ध्यान देना होगा। डॉ. सरदाना ने कहा कि भारत के डेरी सेक्टर का भविष्य उज्ज्वल है, मुझे डॉ. सोढ़ी से बहुत अपेक्षाएं हैं,जो भारतीय डेरी सेक्टर को प्रगति व उन्नति के पथ पर मजबूती से अग्रसर करेंगे।

आईडीए (उत्तर क्षेत्र) के पूर्व अध्यक्ष श्री एस. एस. मान ने अपने संबोधन में डॉ. कुरियन की दूरदृष्टि की सराहना करते हुए कहा कि यह उनके 'विज़न' का ही परिणाम था कि देश में एनडीडीबी जैसी संस्था की स्थापना हुई, जिसने देश भर में डेरी के विकास को गति दी। उनके द्वारा स्थापित संस्थाएं आज भी प्रगति कर रही है और डेरी विकास में योगदान कर रहीं हैं। डॉ. कुरियन डेरी विकास के अपने कार्य में किसी भी प्रकार का राजनीतिक हस्तक्षेप सहन नहीं करते थे, कार्य के प्रति उनकी सत्यनिष्ठा उत्कृष्ट स्तर की थी। उनकी प्रतिबद्ध ता भी अनोखी और असाधारण थी। वह एक बार जो ठान लेते थे, उसे करते अवश्य थे।

श्री कुलदीप शर्मा ने अपने संबोधन में डॉ. कुरियन की आत्मकथात्मक पुस्तक 'आई टू हैडएड्रीम' का उल्लेख करते हुए उनकी विशेषताओ व उपलब्धियों की जानकारी दी। डॉ. शर्मा ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को यह पुस्तक बार–बार पढ़नी चाहिए। डॉ. कुरियन एक दृढ़ इच्छाशक्ति वाले आत्मविश्वासी व्यक्ति थे। उनका आनंद सहकारी मॉडल पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। भैंस के दूध से पाउडर बनाना, उस समय की एक बड़ी नवाचारी सोच थी, और इसने भारतीय डेरी उद्योग के विकास में एक निर्णायक भूमिका निभायी। आज भी उनके विचारों पर चलकर हम डेरी उद्योग को नई ऊर्जा दे सकते हैं। डॉ. कुरियन ने डेरी उद्योग की सफलता के लिए तीन मूलमंत्र दिये थे। पहला, किसी उत्पाद का उत्पादन तभी शुरू करना चाहिए, जब उसके लिए बाजार उपलब्ध हो, और बाजार को किसानों के लिए लाभ सुनिश्चित करना चाहिए। दूसरा, खरीद और मार्केटिंग आपस में संबंधित नहीं हो सकते। तीसरा, प्रत्येक व्यक्ति को अपनी संस्था के लिए तत्परता और समर्पण से कार्य करना चाहिए। आईडीए को राष्ट्रीय हित में नियमन संस्थाओं के साथ मिलकर कार्य करना चाहिए और डेरी के विकल्पों तथा वीगन उत्पादों की चुनौती से निपटना चाहिए। श्री शर्मा ने आईडीए से अनुरोध किया कि इसे डॉ. कुरियन के विचारों को जनमानस तक पहुंचाने के लिए डॉक्युमेंटरी फिल्म का निर्माण करवाना चाहिए।

एग्रीलिव रिसर्च फाउंडेशन के मैनेज़िग ट्रस्टी श्री एम. जे. सक्सेना ने डॉ. कुरियन को स्मरण करते हुए कहा कि संभवतः हम आखिरी पीढ़ी हैं जो उनकी कार्यनीति और विचारों से व्यक्तिगत रूप से परिचित हैं। डॉ. सक्सेना ने सुझाव दिया कि आईडीए को भारतीय डेरी सेक्टर के विकास के लिए नीतियां बनानी चाहिए, और इसके लिए समय–समय पर सामयिक विषयों पर विचार सत्रों का आयोजन करना चाहिए। अनुभवी डेरी व्यवसायियों और कर्मियों को इन सत्रों में अपने अनुभव साझा करने चाहिए। हमें नयी प्रौद्योगिकी और नवाचारों के माध्यम से डेरी सेक्टर के उज्ज्वल भविष्य के लिए कार्य करना चाहिए।

आईडीए–पश्चिम उत्तर प्रदेश लोकल चैप्टर के अध्यक्ष डॉ. अशोक त्रिपाठी ने अपने संबोधन में आग्रह किया कि

आईडीए–पूर्व क्षेत्र कोलकाता में राष्ट्रीय दुग्ध दिवस के अवसर पर डेरी महिला कर्मियो का सम्मान

आईडीए–झारखंड लोकल चैप्टर में डॉ. कुरियन को श्रद्धांजलि अर्पित

आईडीए को सरकार के माध्यम से एक ऐसी नीति बनवाने का प्रयास करना चाहिए, जिसके अंतर्गत विभिन्न सहकारी संस्थाएं और निजी कंपनियां अपने लाभ का एक भाग डेरी किसानों को दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए 'इनपुट' के रूप में प्रदान करें। डेरी पशुओं के प्रजनन, पोषण और स्वास्थ्य के लिए भी यह आर्थिक सहायता मिलनी चाहिए।

बैनी इम्पेक्स्स प्रा. लि., सांइटिफ़िक एंड डिजिटल सिस्टम्स, एनसीडीएफआई, आईआईएल, मदर डेरी, एनडीडीबी आदि संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भी राष्ट्रीय दुग्ध दिवस के आयोजन में भागीदारी की।

आईडीए मुख्यालय के सेक्रेटरी जनरल श्री हरिओम गुलाटी ने सभी अतिथियों, प्रतिभागियों और प्रतिनिधियों के प्रति आभार व्यक्त किया और हार्दिक धन्यवाद दिया।

आईडीए–पश्चिम क्षेत्र

राष्ट्रीय दुग्ध दिवस पर आयोजित समारोह मे ज़ेडईसी के सदस्यों और विभिन्न डेरियों के एमडी तथा अधिकारियों ने डॉ. कुरियन को उनके 103वें जन्मदिवस पर श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री माधव पटगांकर, सचिव ने सभी आमंत्रित अतिथियों का स्वागत किया। आईडीए के अध्यक्ष डॉ. आर. एस. सोढ़ी ने अपने भाषण में डॉ. कुरियन के कार्यों और विचारों की सराहना करते हुए कहा कि उनका नेतृत्व आज भी अनुशासन और समर्पण से कार्य करने की प्रेरणा देता है। आईडीए के उपाध्यक्ष श्री अरुण पाटिल ने कहा कि डॉ. कुरियन के सपनों को साकार करने के लिए हमें बड़े सपने देखने चाहिए। श्री पाटिल ने डॉ. कुरियन के साथ काम करने के अपने अनुभव भी साझा किये। उपाध्यक्ष डॉ. जे. वी. परिख ने कहा कि डॉ. कुरियन को 'भारत रत्न' का सम्मान देना चाहिए और हमें बड़े सपने देखने चाहिए। उपाध्यक्ष श्री शाइजू सिद्धार्थन ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

आईडीए–दक्षिण क्षेत्र

आईडीए–दक्षिण क्षेत्र ने आईसीएआर–एनडीआरआई के दक्षिण रिसर्च स्टेशन, बेंगलुरू के साथ मिलकर राष्ट्रीय दुग्ध दिवस सेमिनार का आयोजन किया। डेरी विशेषज्ञों और वैज्ञानिकों, ने अनेक ज्वलंत तकनीकी विषयों पर उपयोगी जानकारी दी। सेमिनार में 100 से अधिक डेरी व्यवसायियों, वैज्ञानिकों; आईडीए के सदस्यों तथा अन्य प्रतिभागियों ने भागीदारी की। समारोह में कर्नाटक के मांड्या जिले की श्रीमती मंगलम्मा को वर्ष 2025 के लिए कर्नाटक की सर्वश्रेष्ठ महिला डेरी किसान के पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

आईडीए–उत्तर क्षेत्र

आईडीए–हरियाणा राज्य चैप्टर

करनाल गांव में मुख्य रूप से छात्रों के लिए एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें 150 से अधिक छात्रों ने भागीदारी की। इसमें मानव जीवन में दूध के महत्व और लाभों पर चर्चा की गयी। आईडीए–एचएससी के अध्यक्ष डॉ. एस. के. कनवाजिया ने डॉ. कुरियन को श्रंद्धाजलि अर्पित करने के साथ दूध के अनेक स्वास्थ्य लाभों की चर्चा की। उन्होंने बताया कि दूध के नियमित सेवन से हृदय रोगों, कैंसर, कोलेस्टेराल, दांत रोग, रक्तचाप, मोटापा आदि अनेक रोगों व विकारों से सुरक्षा प्राप्त होती है। डॉ. राजेंद्र कुमार, निदेशक, एस.एस.एम. सीनियर सेकंडरी स्कूल, करनाल ने मुख्य अतिथि के रूप में अपने भाषण में

आईडीए–बिहार राज्य चैप्टर में राष्ट्रीय दुग्ध दिवस का आयोजन

पालवारम 2024 का आयोजन

कहा कि दूध सदियों से भारतीय खानपान और संस्कृति का हिस्सा रहा है। दूध के सेवन से समग्र स्वास्थ्य सुधार होता है, और यह बच्चों के लिए विशेषरूप से लाभकारी है। आईसीएआर–एनडीआरआई के अनेक वैज्ञानिकों ने भी दूध के स्वास्थ्य व पोषण लाभों की सरल भाषा में जानकारी दी।

आईडीए–पंजाब राज्य चैप्टर

आईडीए–पीएससी ने कॉलेज ऑफ डेरी एंड फूड साइंस टेक्नोलॉजी, 'गडवासु', लुधियाना के साथ संयुक्त रूप से 21 नवंबर, 2024 को राष्ट्रीय दुग्ध दिवस समारोह का आयोजन किया। इस अवसर पर 'डेरी में आईटी और एआई (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) की भूमिका' विषय पर विचार सत्र का आयोजन किया गया। आईडीए–पीएससी के अध्यक्ष डॉ. इंद्रजीत सिंह ने डेरी सेक्टर के विकास में डॉ. वर्गीज़ कुरियन के अमूल्य योगदानों की जानकारी दी और सभी आमंत्रित अतिथियों व प्रतिभागियों का स्वागत किया। समारोह के संयोजक डॉ. संजीव कुमार उप्पल, डीन, सीडीएफएसटी ने प्रतिभागियों को राष्ट्रीय दुग्ध दिवस के विचार और आयोजन की जानकारी दी। समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. जितेंद्र पॉल सिंह गिल, कुलपति, 'गडवासु' ने अपने भाषण में डेरी फार्मिंग में जैव सुरक्षा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका पर प्रकाश डाला। आईटी और एआई के उपयोग से पशु प्रजनन, पशु स्वास्थ्य व पोषण, डेरी प्रबंधन और दूध व दूध उत्पादों के निर्माण तथा मार्केटिंग को उन्नत बनाया जा सकता है। प्रतिष्ठित विशेषज्ञ वक्ताओं ने भी डेरी सेक्टर में आईटी और एआई की संभावनाओं को रेखांकित किया। वैज्ञानिकों, विशेषज्ञों, व्यवसायियों तथा डेरी किसानों सहित लगभग 200 प्रतिभागियों ने सेमिनार में भागीदारी की। 'अपनी खेती' ने समारोह का 'लाइव' प्रसारण किया। आईडीए–पीएससी के उपाध्यक्ष डॉ. अमनदीप शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

डॉ. रामगोपाल राजगोपाल, पूर्व निदेशक, डेरी विकास विभाग को सम्मान

मुख्य अतिथि श्रीमती मालिनी गोपीनाथ, निदेशक, डेरी विकास विभाग को सम्मान

आईडीए–पूर्व क्षेत्र

आईडीए–पूर्व क्षेत्र ने कोलकाता में एनडीडीबी कार्यालय में राष्ट्रीय दुग्ध दिवस समारोह का आयोजन किया। आईडीए–ईज़ेड के उपाध्यक्ष डॉ. डी.सी. सेन ने अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया और डॉ. कुरियन के कार्यों व उपलब्धियों की सराहना की। आईडीए–ईज़ेड के अध्यक्ष श्री सुधीर कुमार सिंह का संदेश उनकी अनुपस्थिति में पढ़कर सुनाया गया। अपने संदेश में उन्होंने परंपरागत विधियों तथा आधुनिक प्रौद्योगिकी के बीच की खाई को जल्दी से जल्दी पाटने की आवश्यकता पर बल दिया। सुंदरबन सहकारी दूध एवं पशुधन उत्पादक यूनियन लिमिटेड की 10 महिला डेरी किसानों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कार जीतने के लिए

पूकोड, वायनाड में छात्रों को डेरी उत्पाद बनाने का प्रशिक्षण

सम्मानित किया गया। लगभग 90 प्रतिभागियों ने समारोह में भागीदारी की। एनडीडीबी, कोलकाता के डॉ. सब्यसाची राय ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

आईडीए झारखंड लोकल चैप्टर

आईडीए झारखंड लोकल चैप्टर और मेधा डेरी ने रांची में संयुक्त रूप से राष्ट्रीय दुग्ध दिवस का आयोजन किया। झारखंड मिल्क फेडेरेशन के एमडी श्री जयदेव विश्वास, आईडीए–ईज़ेड के अध्यक्ष श्री सुधीर कुमार सिंह, और आईडीए–ईज़ेड के उपाध्यक्ष श्री मिल्टन श्रीवास्तव ने डॉ. कुरियन के साथ अपने कार्य–अनुभव साझा किये। इस अवसर पर मेधा डेरी ने अनाथालय, ब्लाइंड स्कूल और वृद्धाश्रम में कंबल तथा डेरी उत्पादों का वितरण किया। साथ ही एक प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम भी आयोजित किया गया।

कालाहालामेडु में जीवनीयम का आयोजन

आईडीए–बिहार स्टेट चैप्टर

आईडीए–बीएससी ने संजय गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ डेरी टेक्नोलॉजी, पटना के साथ संयुक्त रूप से राष्ट्रीय दुग्ध दिवस का आयोजन किया। आईडीए–बीएससी के अध्यक्ष

सीडीएसटी, त्रिवेंद्रम में सर्वश्रेष्ठ डेरी महिला किसान पुरस्कार

और पूर्व–एमडी, मिथिला मिल्क यूनियन लिमिटेड, समस्तीपुर डॉ. डी. के. श्रीवास्तव इस समारोह में मुख्य अतिथि थे। आयोजन का मुख्य विषय 'ट्रांसफार्मिंग डेरीइंग विथ़ एआई एंड आईटी' था। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के डीन डॉ. उमेश सिंह ने की। आईडीए–बीएससी के सदस्यों, संस्थान की फैकल्टी, छात्रों और कर्मचारियों ने समारोह में भागीदारी की। मुख्य अतिथि ने अपने भाषण में दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए बेहतर आहार, चारे और पशु स्वास्थ्य के महत्व पर जोर दिया और डेरी में अक्षय ऊर्जा के उपयोग को बढ़ाने को कहा। डीन महोदय ने अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रजनन प्रबंधन के माध्यम से बिहार में दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए बेहतर आहार, चारे और पशु स्वास्थ्य के महत्व पर जोर दिया और डेरी में अक्षय ऊर्जा के उपयाग को बढ़ावा देने की अपील की। डीन महोदय ने अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रजनन प्रबंधन के माध्यम से बिहार में दूध उत्पाद बढ़ाने की सलाह दी।

आईडीए–केरल स्टेट चैप्टर, पालवारम

राष्ट्रीस दुग्ध दिवस के अवसर पर आईडीए–केएससी ने वर्गीज़ कुरियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ डेरी एंड फूड टेक्नोलॉजी, केरल पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के साथ संयुक्त रूप से 'पालवारम–24' नाम से एक सप्ताह के कार्यक्रम का आयोजन किया। समारोह का उद्घाटन वी. के.आईडीएफटी के डेरी और आईडीए–केएससी के अध्यक्ष डॉ. एस. एन. राजकुमार ने 20 नवंबर को किया। इस अवसर पर संस्थान ने छात्रों और आम जनता के लिए अनेक प्रतियोगिताएं आयोजित कीं और स्कूली बच्चों के लिए जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें श्रीमती शालिनी गोपीनाथ, निदेशक, डेरी विकास विभाग, मुख्य अतिथि थीं। डॉ. ए. के. बीना ने दुग्ध दिवस की शपथ दिलायी।

डॉ. शीला नायर को प्रतिष्ठित पुरस्कार

कॉलेज ऑफ़ डेरी साइंस एंड टेक्नोलॉजी, पूकोड, वायनाड

आईडीए–केएससी ने कॉलेज ऑफ डेरी साइंस एंड टेक्नोलाजी के साथ मिलकर संयुक्त रूप से राष्ट्रीय दुग्ध दिवस अवसर पर डेरी किसानों और उद्यमियों के लिए मूल्य संवर्धित उत्पादों पर एक हैंड्स–ऑन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। इसमें केरल की 26 महिला उद्यमियों ने भागीदारी की।

कॉलेज ऑफ़ डेरी साइंस एंड टेक्नालॉजी, कालाहालामेडु–डेरी एक्सपो 24 जीवनीयम

राष्ट्रीय दुग्ध दिवस के अवसर पर कॉलेज में जीवनीयम–24 का डेरी एक्सपो के रूप में नवंबर 22–26 तक आयोजन किया गया। इदुक्की जिले के अनेक विद्यालयों में बच्चों के लिए प्रतियोगिताओं का आयोजन भी हुआ। डेरी एक्सपो का उद्घाटन 22 नवंबर को पीरमेडु के एमएलए श्री वज़हूर समन ने किया। इस अवसर पर इदुक्की जिले के डिस्ट्रिक्ट कलेक्टर और डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट भी उपस्थित थे।

आईडीए–सर्वश्रेष्ठ महिला डेरी किसान पुरस्कार, सीडीएसटी, त्रिवेंद्रम

इस विशेष कार्यक्रम का उद्घाटन माननीय डेरी और पशुपालन मंत्री श्रीमती जे. चिंचू रानी ने किया। केवीएएसयूके कुलपति डॉ. अनिल के. एस. ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। कोट्टायम की श्रीमती विधु राजीव को आईडीए सर्वश्रेष्ठ महिला डेरी किसान पुरस्कार से सम्मानित किया गया। अनेक महाविद्यालयों के छात्रों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में भागीदारी की और नकद पुरस्कार जीते।

यूनडीपी प्रोजेक्ट एसकेपीसीएल–आईआईटी मद्रास

राष्ट्रीय दुग्ध दिवस के अवसर पर यूएनडीपी प्रोजेक्ट एसकेपीसीएल–आईआईटी, मद्रास ने संयुक्त रूप से एक सेमिनार का आयोजन किया। इसका विषय सतत् डेरी का विकास था।

राष्ट्रीय दुग्ध दिवस के अवसर पर यूएनडीपी प्रोजेक्ट एसकेपीसीएल के मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. राजा रत्नम ने अपने संबोधन में देश के डेरी विकास में डॉ. कुरियन के अहम योगदानों की चर्चा की। इस अवसर पर श्रीमती शांता शीला नायर, आईएएस को प्रतिष्ठित डॉ. वर्गीज़ कुरियन सस्टेनेबल डेवलवमेंट एवार्ड से सम्मानित किया गया।

कॉलेज ऑफ़ डेरी साइंस, कामधेनु युनिवर्सिटी, अमरेली

राष्ट्रीय दुग्ध दिवस के अवसर पर कॉलेज ऑफ़ डेरी साइंस के प्रिंसिपल डीन डॉ. वी.एस.एम. रमानी ने समारोह का आयोजन कर डॉ. कुरियन के योगदानों का स्मरण किया। उन्होंने दूध के महत्व पर भी महत्वपूर्ण जानकारी दी। कॉलेज के छात्रों ने डेरी के उप–उत्पादों के महत्व पर चर्चा की और इसके उपयोग से संबंधित समस्याओं का समाधान तलाशने का प्रयास किया। ■

कामधेनु युनिवर्सिटी, अमरेली में राष्ट्रीय दुग्ध दिवस का आयोजन

THE ONE THING THAT
MAKES ALL OUR PRODUCTS
DELIGHTFULLY DELICIOUS
IS THE GOODNESS OF
OUR MILK.
MOTHER DAIRY
Milk
UHT STERILISED & HOMOGENIZED TONED MILK
MOTHER DAIRY
Ghee
GOOD SOURCE OF ENERGY
Goodness of Vitamin A
Great Taste
CUSTARD
simply
cut pour enjoy
sweet rich
creamy
happiness
Mishti Doi
happiness
of juicy
mangoes
with mishti
doi
Aam Doi
soft creamy
delicious
happiness
Paneer
For more information, call 1800-1801-018 or visit: www.motherdairy.com

MOTHER DAIRY
cheesy
wholesome
tasty
happy
Butter
rich
creamy
happiness
CHILLZ
happy mix of
real fruits
with delicious
curd
FRUIT YOGHURT
BLUEBERRY
rich in
calcium
& source
of protein
CHEESE SLICES
Cold Coffee
MILK SHAKE
LASSI
the happiest
mix of healthy
and tasty
ULTIMATE
dahi
PROBIOTIC
dahi
thick rich
fruity
happiness
*Visual Depiction Only

नवंबर 2024

पशुपालन

पशुपालकों के लिए

(सौजन्यः

- मुंहपका–खुरपका रोग का टीका पशुओं को अवश्य लगवाएं।
- अंतःकृमि नाशक दवा का सेवन अवश्य कराएं।
- पशुओं को संतुलित आहार दें।
- बरसीम तथा जई अवश्य बोएं।
- 50 ग्राम खनिज मिश्रण एवं 50 ग्राम नमक प्रत्येक पशु को खिलाएं।
- थनैला रोग होने पर पशुचिकित्सक से समुचित उपचार कराएं।
- बहुवर्षीय घासों की कटाई करें, इसके बाद यह सुषुप्त अवस्था में चली जाती हैं, जिससे अगली कटाई तापमान बढ़ने पर फरवरी–मार्च में ही प्राप्त होती है।
- अदि आपके क्षेत्र में सर्दी बढ़ रही हो तो पशुओं को ठंड से बचाने के उपाय करें।

कैलेंडर 2024

उपयोगी मासिक जानकारी

पशुधन प्रहरी)

दिसंबर 2024

- पशुओं का ठंडक से बचाव करें, परंतु झूल डालने के पश्चात आग से दूर रखें।
- पशु तथा नवजात बच्चों को अंतःकृमिनाशक अवश्य अवश्य पिलाएं।
- अभी तक टीकाकरण से बचे पशुओं में खुरपका –मुंहपका रोग का टीका अवश्य लगवाएं।
- शूकरों में स्वाइन फीवर का टीका अवश्य लगवाएं।
- दुधारू पशुओं को थनैला रोग से बचाने के लिए पूरा दूध निकालें और दूध दोहन के बाद थनों को कीटाणुनाशक घोल से धो लें।
- यदि इस समय वातावरण में बादल नहीं हैं और पशुओं को खिलाने के लिए अतिरिक्त हरा चारा बचा हुआ है तो उसे छाया में सुखाकर "हे" के रूप में संरक्षित कर लें।
- बुआई के 50 से 55 दिन बाद बरसीम एवं 55 से 60 दिन बाद जई के चारे की कटाई करें।

समारोह

राष्ट्रीय दुग्ध दिवस पर भारत की अर्थव्यवस्था में डेयरी क्षेत्र के योगदान की सराहना

साभार : प्रेस इंफार्मेशन ब्यूरो, भारत सरकार

भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय दुग्ध दिवस समारोह का आयोजन

मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय के अंतर्गत पशुपालन और डेयरी विभाग (डीएएचडी) ने 26 नवंबर को नई दिल्ली के मानेकशॉ सेंटर में राष्ट्रीय दुग्ध दिवस 2024 मनाया। इस कार्यक्रम में भारत में श्वेत क्रांति के जनक डॉ. वर्गीज़ कुरियन की 103वीं जयंती मनाई गई। उनकी विरासत का सम्मान करने के लिए नीति निर्माता, किसान और उद्योग जगत के नेता एक मंच पर जुटे थे। कार्यक्रम में केंद्रीय मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी और पंचायती राज मंत्री श्री राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह मुख्य अतिथि के रूप में तथा राज्य मंत्री प्रो. एसपी सिंह बघेल व श्री जॉर्ज कुरियन सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में देश भर से पशुधन और डेयरी क्षेत्र से जुड़े लोगों ने भाग लिया। समारोह के दौरान केंद्रीय मंत्री श्री राजीव रंजन सिंह ने राज्य मंत्री प्रो. एसपी सिंह बघेल और श्री जॉर्ज कुरियन के साथ मिलकर तीन श्रेणियों में विजेताओं को राष्ट्रीय गोपाल रत्न पुरस्कार प्रदान किए। ये पुरस्कार हैं –स्वदेशी गाय–भैंस की नस्लों का पालन करने वाले सर्वश्रेष्ठ डेयरी किसान, सर्वश्रेष्ठ कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन और सर्वश्रेष्ठ डेयरी सहकारी समिति (डीसीएस)–दूध उत्पादक कंपनी/डेयरी किसान उत्पादक संगठन। पूर्वोत्तर क्षेत्र के विजेताओं को प्रत्येक श्रेणी में नए शुरू किए गए विशेष पुरस्कार भी दिए गए। केंद्रीय मंत्री श्री राजीव रंजन सिंह ने अपने संबोधन में भारतीय अर्थव्यवस्था में डेयरी क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका पर बल दिया। उन्होंने कहा कि डेयरी क्षेत्र का राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में 5 प्रतिशत का योगदान है और इसमें 8 करोड़ से अधिक किसानों को सीधे रोजगार मिल रहा है, जिनमें से अधिकांश महिलाएं हैं। दुग्ध उत्पादन के मामले में भारत पहले स्थान पर है, जो

वैश्विक दूध उत्पादन में 24 प्रतिशत का योगदान देता है। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि 2022–23 में भारत की प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता 459 ग्राम प्रतिदिन है, जो 2022 के विश्व औसत 323 ग्राम प्रतिदिन से काफी अधिक है। उन्होंने कहा कि जैसे–जैसे देश दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है, इसमें डेयरी क्षेत्र का योगदान भी बढ़ता जाएगा। उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि डेयरी क्षेत्र में असंगठित क्षेत्र को संगठित क्षेत्र के अंतर्गत लाया जाना चाहिए, क्योंकि इससे किसानों की आय बढ़ाने में मदद मिलेगी। केंद्रीय मंत्री ने सहकारी समिति के गुजरात मॉडल की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह एक ऐसा उदाहरण है, जो बिचौलियों को कम करके अच्छा काम कर रहा है। उन्होंने कहा कि यह मॉडल किसानों की आय को कई गुना बढ़ाने में सक्षम है। केंद्रीय मंत्री ने डेयरी फार्मिंग में सेक्स सॉर्टेड सीमेन जैसी तकनीकों को शामिल करने और इस क्षेत्र में कवरेज को मौजूदा 35 प्रतिशत से बढ़ाकर 70 प्रतिशत से अधिक करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा कि पशुधन डेटा तैयार किया जा रहा है, नस्ल सुधार पर व्यापक स्तर काम किया जा रहा है। इसके साथ ही खुरपका और मुंहपका रोग तथा ब्रूसेलोसिस के लिए निःशुल्क टीके लगाए जा रहे हैं, ताकि 2030 तक इन रोगों को खत्म किया जा सके। इन सभी पहलों का उद्देश्य भारत को आने वाले दिनों में प्रमुख दूध निर्यातक बनाना है। केंद्रीय मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी राज्य मंत्री ने प्रो. एस.पी. सिंह बघेल अपने संबोधन में भारत के डेयरी क्षेत्र की सफलता में महिलाओं और युवाओं के योगदान की सराहना की। मंत्री महोदय ने उन्हें इस उद्योग में नेतृत्व की भूमिका निभाने और दीर्घकालिक स्थिरता के लिए नवीन प्रथाओं का लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने वैश्विक दूध उत्पादन में देश को शीर्ष पर बनाए रखने के लिए विभाग और सभी हितधारकों के प्रयासों की भी सराहना की। उन्होंने उल्लेख किया कि दूध उत्पादन में वार्षिक वैश्विक वृद्धि दर 2 प्रतिशत है, जबकि भारत में दूध उत्पादन वार्षिक 6 प्रतिशत की दर से बढ़ रहा है। इसके अलावा उन्होंने प्रतिभागियों से कृत्रिम गर्भाधान (एआई) दर का कवरेज बढ़ाने, सेक्स–सॉर्टेड वीर्य और आईवीएफ (इनविट्रो फर्टिलाइजेशन) जैसी बेहतर प्रजनन तकनीकों को अपनाने का आग्रह किया। उन्होंने नियमित टीकाकरण के माध्यम से खुरपका और मुंहपका रोग के उन्मूलन पर जोर दिया, जो भारत के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि होगी। केंद्रीय मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी राज्य मंत्री ने श्री जॉर्ज कुरियन भारतीय अर्थव्यवस्था में डेयरी सहकारी समितियों के योगदान

माननीय अतिथियों द्वारा उपयोगी मैनुअल जारी

माननीय केंद्रीय मंत्री का संबोधन

और महिला सशक्तिकरण में उनकी भूमिका की सराहना की। उन्होंने डेयरी मूल्य श्रृंखला में समान विकास सुनिश्चित करने के लिए विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में मजबूत बुनियादी ढांचे और पशु चिकित्सा सहायता प्रणालियों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

पशुपालन और डेयरी विभाग (डीएएचडी) की सचिव श्रीमती अलका उपाध्याय ने वैज्ञानिक हस्तक्षेपों के माध्यम से दूध उत्पादकता में सुधार के लिए विभाग के निरंतर प्रयासों को रेखांकित किया। उन्होंने ग्रामीण डेयरी बुनियादी ढांचे के आधुनिकीकरण, बाजार संपर्क को बढ़ावा देने और समावेशी विकास सुनिश्चित करने के लिए किसानों को प्रशिक्षण प्रदान करने के महत्व पर बल दिया। उन्होंने दीर्घकालिक विकास प्राप्त करने में आनुवंशिक सुधार और उन्नत प्रजनन तकनीकों जैसे वैज्ञानिक उपायों के महत्व को भी रेखांकित किया।

कार्यक्रम में उत्कृष्ट गायों की पहचान संबंधी 'सुरभि श्रृंखला' मैनुअल के साथ बुनियादी पशुपालन सांख्यिकी (बीएएचएस)–2024 जारी किया गया। पशुधन और डेयरी क्षेत्र के रुझानों के बारे में यह महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती है। यह मैनुअल देश में राष्ट्रीय दुधारू झुंड की स्थापना के लिए है, जो हमारे किसानों के पास या गौशाला/गौसदन/पिंजरापोल में उपलब्ध श्रेष्ठ जर्मप्लाज्म की पहचान और स्थान के लिए महत्वपूर्ण है। इससे पहले समारोह के दौरान राज्य मंत्री प्रो. एसपी सिंह बघेल ने मानेकशॉ सेंटर में अमूल स्वच्छ ईंधन रैली की अगवानी की, जिसमें अमूल के विभिन्न सदस्य संघों और भारत भर में जीसीएमएमएफ के 25 से अधिक शाखा कार्यालयों के 77 से अधिक प्रतिभागी शामिल हुए। 'महिलाओं के नेतृत्व में पशुधन और डेयरी क्षेत्र' और स्थानीय पशु चिकित्सा सहायता के माध्यम से किसानों को सशक्त बनाना' विषयों पर दो पैनल चर्चाएँ भी आयोजित की गईं, जिसमें विशेषज्ञों ने भारत के डेयरी तंत्र के सतत् विकास के बारे में जानकारी साझा की। इन चर्चाओं में क्षेत्र के भविष्य को आकार देने में महिलाओं और स्थानीय पशु चिकित्सा पहलों की परिवर्तनकारी भूमिका पर प्रकाश डाला गया। इस अवसर पर अतिरिक्त सचिव (मवेशी एवं डेयरी विकास) सुश्री वर्षा जोशी और सलाहकार (सांख्यिकी) श्री जगत हजारिका तथा कई अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे। ■

डेरी किसान महिला का सम्मान

परिचय

अजमेर डेरी, सहकारिता व दुग्ध विकास

रामचन्द्र चौधरी

अध्यक्ष, अजमेर डेरी एवं सदस्य, आईडीए

अध्यक्ष द्वारा डेरी निरीक्षण

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जिसमें डेरी एवं पशुपालन का योगदान सबसे ज्यादा है। कुल 239.3 मिलियन टन दूध उत्पादन के साथ भारत वर्तमान में दुनिया का सबसे अधिक दूध उत्पादन करने वाला देश है। यह दुनिया के दूध उत्पादन में लगभग 24 प्रतिशत का योगदान करता है। देश के दूध उत्पादन की वार्षिक वृद्धि की दर लगभग 5.3 प्रतिशत है। इसलिए भारत में डेरी क्षेत्र ग्रामीण परिवारों को आर्थिक रूप से सशक्त करता है।

चूंकि डेरी मुख्य रूप से महिला केंद्रित व्यवसाय है, इसलिये यह महिला सशक्तिकरण में काफी योगदान करता है। भारत में लाखों ग्रामीण परिवार, विशेषकर छोटे व लघु सीमान्त किसान, अपनी आजीविका के लिए डेरी फार्मिंग पर निर्भर हैं।

इनके आर्थिक उत्थान का श्रेय डेरी क्षेत्र में सहकारिता आन्दोलन को दिया जाता है।

सहकारी दूध क्षेत्र का महत्व

सहकारिता का मुख्य लक्ष्य यह है कि समान उद्देश्य के लिये कई लोग अथवा संस्थाएं मिलकर सामूहिक रूप से कार्य करें। सहकारी शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है: सह+कार, सह का अर्थ है मिलकर व कार का अर्थ है काम करना। इसी आधार पर भारत में सहकारी डेरियों का विस्तार और प्रसार हुआ है।

सहकारी दूध क्षेत्र में खासकर महिलाओं और भूमिहीन व छोटे सीमान्त किसानों को जोड़ा गया है और यह लगभग तीन मिलियन ग्रामीण परिवारों का आर्थिक सम्बल रहा है। डेरी क्षेत्र की उच्च वृद्धि दर ग्रामीण क्षेत्र में डेरी पशुपालकों को आत्मनिर्भर बनाने में सहायता प्रदान करती है।

डेरी सहकारिता का इतिहास

पूर्व में, सन् 1960 के दशक में डेरी क्षेत्र में निजी पार्टियों का एवं दलालों का विशेष दखल था। इस कारण पशुपालकों को दूध का उचित मूल्य प्राप्त नहीं हो रहा था तथा उनका आर्थिक शोषण भी होता था।

सहकारिता आन्दोलन आने के बाद अमूल द्वारा ऑपरेशन फ्लड के दौरान त्रिस्तरीय सहकारी मॉडल अपनाये जाने स ग्रामीण स्तर पर दूध समिति, जिला स्तर पर दूध संघ, व राज्य स्तर पर दूध फेडेरेशन का गठन हुआ। इससे

पशुपालकों की सहकारिता में भागीदारी बढ़ी तथा उनके उत्पाद का उचित मूल्य मिलने लगा।

महिला सशक्तिकरण

भारत में डेरी क्षेत्र में महिलाओं का वर्चस्व रहा है। महिलाओं ने अपनी घरेलू जिम्मेदारियों के अतिरिक्त बिना किसी संदेह डेरी एवं पशुपालन का कार्य भी पूर्ण रूप से और समर्पण से किया है।

पुरुषों की तुलना में महिलाओं ने ज्यादा समय दिया है व इनका अधिक योगदान रहा है। इसी को ध्यान में रखते हुए महिला डेरी विकास कार्यक्रम चलाया गया। सहकारिता में महिला समितियों का गठन तथा महिलाओं को सशक्त करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। इसमें महिलाओं की भागीदारी बढ़ने के साथ–साथ उनके आर्थिक स्तर में काफी सुधार आया है।

अजमेर डेरी का विकास एवं सहकारिता का योगदान

राजस्थान के अजमेर जिले में लगभग 1123 गांव हैं। कृषि के अतिरिक्त डेरी एवं पशु पालन ग्रामीण क्षेत्र में आजीविका का मुख्य साधन हैं। प्रारम्भ में, बावजूद इसके कि कृषक समाज दुधारू पशुओं की सेवा में काफी समर्पित रहता था। पशुपालन व्यवसाय आर्थिक रूप से सफल नहीं हो रहा था। इसके मुख्य कारण इस प्रकार थेः–

पशुओं की दूध उत्पादन की क्षमता की कमी, हरे चारे का अभाव एवं सबसे प्रमुख दूध व्यवसाय के संगठित नहीं होने के कारण दूध का मूल्य ठेकेदारों एवं बिचोलियों के द्वारा निर्धारित किया जाता था। इसके कारण पशुपालकों को अपने दूध का मूल्य बहुत ही कम मिलता था व कभी–कभी दूध के ठेकेदार दूध का बकाया भुगतान नहीं करके भाग जाया करते थे।

इन्हीं कारणों को देखते हुए अजमेर के पशुपालको ने सहकारिता एवं अमूल पैटर्न के आधार पर डेरी के व्यवसाय को आगे बढाने का निश्चय किया।

प्रारम्भ में, 1972 में पंचायत समिति भिनाय (कोटड़ी) में दूध संकलन का कार्य किया गया। उस समय प्रातः पारी में 3 घण्टे के क्लेक्शन में 34 लीटर दूध का संकलन हुआ, जिसे तुरन्त अजमेर लाकर विपणन किया गया।

उस वक्त बाजार में शुद्ध दूध की मांग काफी थी, लगभग 500 उपभोक्ता दूध खरीदने के लिये तैयार थे। मात्र 15 मिनट में समस्त दुग्ध विक्रय हो गया। इसको देखते हुये अजमेर जिले के पीसांगन मसूदा भिनाय के गांवों में प्रचार –प्रसार करके दूध संकलन का कार्य अमूल पैटर्न पर प्रारम्भ किया गया।

उक्त दूध को अजमेर लाकर आईस फैक्ट्री में ठण्डा किया जाने लगा, प्रारम्भ में 5000 लीटर दूध संकलित होने लगा। तत्पश्चात राज्य सरकार द्वारा मनोनीत बोर्ड बनाया गया। संघ की स्थापना 14 फरवरी 1972 में हुई।

मनोनीत संचालक मण्डल का प्रशासक जिले के कलेक्टर को बनाया गया। धीरे–धीरे दूध का संकलन बढ़ता गया व संघ के संचालक मण्डल के निर्वाचन हेतु दूध उत्पादकों द्वारा धरना–प्रदर्शन भी किया गया।

उस समय राजस्थान में अकाल का काफी प्रभाव था। अकाल के समय राज्य सरकार द्वारा 50 प्रतिशत छूट पर चारा व पशु आहार पशुपालकों को दिलवाने हेतु प्रयास किया गया। इसी क्रम में पशुपालकों ने पूरे राजस्थान में मांगों के समर्थन पर हड़ताल किया। वर्ष 1988 में श्री राजीव गांधी जी व श्रीमती सोनिया गांधी जी ने पूरे प्रदेश की अकाल स्थिति की आकलन करने हेतु तीन दिवस का भ्रमण किया। इसी दौरान उन्होंने मसूदा दुग्ध उत्पादक समिति का भवन उद्घाटन किया। इसके पश्चात तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री हरदेव जोशी द्वारा श्री राजीव जी के समक्ष वार्ता की गई, जिसमें समस्याओं का निवारण करते हुए पांच लाख पशुओं को चारा व पशु आहार 50 प्रतिशत अनुदान पर देने की घोषणा की गई एवं उक्त को तुरन्त लागू किया गया।

दूध की आवक को देखते हुए वर्ष 1985–86 में 1 लाख लीटर प्लांट की स्थापना की गई, पूर्व में यह 60 हजार लीटर की क्षमता का था।

वर्ष 1990 में दूध उत्पादकों के लगातार संघर्ष करने पर दूध उत्पादक संचालक मण्डल का चुनाव सम्पन्न हुआ।

जहां वर्ष 1990–91 में संघ का दूध संकलन 42651 लीटर व दूध मार्केटिंग 13536 लीटर था, वहीं वर्ष 1997–98 में संघ का दूध संकलन 85342 लीटर व मार्केटिंग 35477 लीटर था। इसका विवरण सारणी 1 में दिया गया है।

सारणी–1: अजमेर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, अजमेर प्रतिदिन औसत दुग्ध संकलन एवं दुग्ध बिक्री विवरण (1990 से 1998 तक)

वर्ष	औसत दुग्ध संकलन (कि.ग्रा.) प्रतिदिन	औसत दुग्ध बिक्री लीटर प्रतिदिन
1990–91	42651	13536
1991–92	36594	12900
1992–93	60024	18020
1993–94	63728	23662
1994–95	44960	29354
1995–96	54910	27680
1996–97	65020	33399
1997–98	85342	35473

दूध संकलन हमारी सोच से बहुत ही कम आ रहा था। दूध संकलन को गति देने व अधिक से अधिक पशुपालकों को डेरी आन्दोलन से जोड़ने के लिए निम्नलिखित योजनायें चलाई गईः

- **स्वच्छ दूध उत्पादन योजनाः** इस योजना के अन्तर्गत प्रारम्भ में दस बीएमसी (बल्क मिल्क कूलर) 2 KL के समितियों पर लगाये गये व उन्हें स्वच्छ दूध उत्पादन के लिये ट्रेनिंग दी गई। दूध की टेस्टिंग व मिलावट रोकने के लिये 300 लेक्टोस्केन, 115 बी.आर. मीटर दूध समितियों को दिये गये।
- **राष्ट्रीय कृषि विकास योजनाः** इस योजना के अन्तर्गत 111 BMC 1 KL व 5 BMC 1 KL का दिया गया है। दूध टेस्टिंग के लिये 172 AMCU दिये गये।
- **NPDD I & II :** इस योजना में NPDD I VBMPS में वर्ष 2014–15 में व 2016–17 के अन्तर्गत दूध समितियों को 93 BMC 2 KL के तथा 9 BMC 1 KL के तथा 372 AMCU सेट दिये गये।
- **NDP- I VBMPS II योजनाः** इसके अन्तर्गत 2017–18 से 2018–19 के बीच दूध समितियों को 27 BMC 2 KL के और 102 AMCU सेट दिये गये।
- **NPDD योजनाः** वर्ष 2017–18 व 2018–19 में 344 AMCU सेट तथा 287 मिल्को स्केन दूध समितियों को दिये गये।
- NPDD वर्ष 2022–23 से वर्ष 2023–24 में 14 BMC 5 KL के 9 BMC 1 KL के, 86 इलेक्ट्रोनिक मिल्क एनालाइजर तथा 448 AMCU दिये गये। दूध की मिलावट की जांच के लिए टेस्टिंग मशीनें एवं सचिवों को प्रशिक्षण दिया गया।
- पूर्व मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत के कार्यकाल में राजस्थान में 500 BMC दी गईं, जिसमे से अजमेर जिले को 80 BMC दी गईं। इस प्रकार वर्तमान में लगभग 320 BMC कार्यरत हैं और पूर्ण शीत श्रृंखला प्रणाली है।

उपरोक्त योजनाओं के समय–समय पर लागू होने पर अजमेर जिले में श्वेत क्रान्ति के अन्तर्गत स्वच्छ दूध उत्पादन में बड़ा योगदान हुआ।

पशुओं की खरीद एवं नस्ल सुधार

अजमेर जिले में नाबार्ड की योजना के अन्तर्गत लगभग 40 हजार दुधारू पशु खरीदे गये। इसके अतिरिक्त SGSY योजना के अंतर्गत 2000 दुधारू पशु हरियाणा राज्य से खरीदें कर जिले के दुग्ध उत्पादकों को दिये गये। इससे दुग्ध उत्पादन में काफी वृद्धि हुई।

नस्ल सुधार में प्राकृतिक प्रजनन हेतु उच्च नस्ल के विगत 30 वर्षों में मुर्रा नस्ल के 4000 पाड़ें तथा गिर नस्ल 1000 सांड गांवों में दूध समितियों को अनुदानित दर पर दिये जा चुके है।

सामान्य फ्रोज़ीन सीमन (हिमीकृत वीर्य) के अतिरिक्त सेक्स सोर्टेड सीमन (लिंग चयनित वीर्य) कृत्रिम गर्भाधान केन्द्रों के माध्यम से उपलब्ध करवाये जा रहे हैं, जिसमें लगभग 700 रु. प्रति खुराक दुग्ध संघ द्वारा अनुदान दिया जा रहा है।

नये प्लांट की स्थापना

अजमेर जिला दुग्ध संघ पूर्णतया सहकारिता के सिद्धान्तों के अन्तर्गत संचालित है। इसका निर्वाचित संचालक मण्डल अपने दायित्वों का पूर्णतया निर्वाह करता है। संचालक मण्डल ने यह महसूस किया कि उपरोक्त साधनों के साथ जब संघ से अधिक से अधिक गांव जुड़ने लगेंगे तो दूध की मात्रा बढ़ने लगी, जो वर्तमान प्लांट क्षमता से काफी अधिक होगी। तब संघ को नये प्लांट की आवश्यकता महसूस हुई। इसके लिये संघ ने राज्य/केन्द्र सरकार से RKVV योजना में नया दूध प्लांट लगाने की सिफारिश की जो सफल नहीं हो पाया।

इसके बाद संघ के संचालक मण्डल ने निर्णय लेकर NCDC से 320 करोड़ रु. का ऋण लेकर NDDB द्वारा 8 लाख लीटर दूध क्षमता एवं 30 MT पाउडर प्लांट बनाया गया। यह वर्ष 2019 में पूर्ण तथा तैयार होकर सुचारू रूप से संचालित हो रहा है।

इसके पूर्व जहां अजमेर का दूध संकलन बढ़ने के कारण दूसरे जिला दूध संघों के प्लांट में प्रोसेस के लिये भेजा जा रहा था, जिसमें संघ के 8 से 10 करोड़ रुपये खर्च हो रहे थे। नये प्लांट की स्थापना के कारण अजमेर जिले के दूध का प्रोसेस तथा अन्य जिला दूध संघों से आया दूध का भी प्रोसेस किया जा रहा है। इससे संघ को 18 करोड़ रुपये की आय हो रही है।

नये प्लांट में 56 प्रकार के विभिन्न उच्च स्तरीय गुणवत्ता के पदार्थ बनाकर बेचे जा रहे हैं। वर्तमान में अजमेर जिला दूध संघ में कुल 835 दूध समितियां है, जिनमें 251 महिला समितियां तथा 584 पुरुष समितियां संचालित हैं। इनमें महिला सदस्यों की संख्या 18247 व पुरुष सदस्यों की संख्या 42382 है। जिले के लगभग 60 हजार पशुपालक अजमेर दुग्ध संघ से जुड़े हुये हैं, जिनके माध्यम से दुग्ध संकलन लगभग 5 लाख लीटर प्रतिदिन किया जा रहा है एवं संघ द्वारा 3.56 लाख लीटर दूध का प्रतिदिन विपणन किया जा रहा है। अन्य दुग्ध संघों से भी प्रतिदिन 3 लाख लीटर दूध प्रोसेस हेतु आ रहा है।

सहकारिता के इस आन्दोलन का अजमेर जिला दूध संघ एक जीता–जागता उदाहरण है। जहां प्रारम्भ में दूध

सारणी–2: अजमेर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लि., अजमेर का तुलनात्मक प्रगति विवरण

क्र.सं.	विवरण	इकाई	2019–20	2020–21	2021–22	2022–23	2023–24
1	पंजीकृत समितियां	संख्या	737	743	791	810	822
2	समिति सदस्यता	संख्या	52520	53453	56502	59424	60084
3	दुग्ध संकलन	किलो प्र.दि.	283897	273423	310884	303555	313231
4	दर प्रतिकिलो	रुपये	43.55	40.19	42.81	48.34	49.38
5	दुग्ध भुगतान	लाख रुपये	45255.88	40109.60	48572.47	53554.83	56452.37
6	बी.एम.सी	संख्या	303	303	303	300	320
7	ए.एम.सी.यू.वपी. एम.सी.यू	संख्या	1254	1254	1254	833	833

(सारणी क्रमशः)

(पूर्व पृष्ठ से जारी)

8	पशु आहार बिक्री	मी.टन	48740	49374	57286	61567	53892
9	कृत्रिम गर्भाधान	संख्या	11482	12187	13701	12842	12632
10	बीमा (एस.एस.के)	संख्या	21762	21762	21762	21762	24821
11	घी उत्पादन	मी.टन	2032.159	2080.198	2423.591	3601.377	3412.024
12	घी बिक्री	मी.टन	3295.557	1917.422	2605.646	2566.055	1983.218
13	एस.एम.पी उत्पादन	मी.टन	932.955	4088.386	5688.450	5397.649	6302.723
14	एस.एम.पी. बिक्री	मी.टन	1897.186	734.703	1719.825	1008.571	2074.895
15	शहरी दुग्ध विक्रय	ली. प्र.दि.	200103	182771	190581	235439	245319
16	छाछ	लीटर	6479954	4740351	5663439	7451882	6860439
17	दही	कि.ग्राम	209415	314371	1587768	2268047	2304866
18	पनीर	कि.ग्राम	79438	101594	153614	201130	228801
19	चारा बीज बिक्री	क्विंटल	70.34	0.00	64.10	61.95	59.41
20	अंश पूंजी	लाख रुपये	4556.81	4943.21	4943.22	4943.23	6329.47

संघ अपने दूध को एक किराये की फैक्ट्री में ठण्डा करता था, वहीं वर्तमान में संघ अपने साधनों से 320 करोड़ रुपये का विश्वस्तरीय प्लांट बनाकर दूध प्रोसेस कर रहा है।

अजमेर के सभी सक्षम गावों में दूध समितियां शुरू हो गईं हैं। समितियों से काफी छोटे कृषक एवं महिलायें जुड़ी हुईं हैं। इसी क्रम में पूर्व राज्य सरकार की भांति वर्तमान राज्य सरकार द्वारा निम्न योजनाएं पशुपालकों के लिये चलाई जा रहीं हैं :–

- राज्य सरकार दूध उत्पादकों को 5 रुपये प्रति लीटर दूध प्रोत्साहन राशि दे रही है, जिसके हम आभारी हैं। इस कारण दूध की मात्रा प्रतिदिन बढ़ रही है तथा किसान भी आर्थिक रूप से सम्बल हो रहा है।
- इसके अलावा राज्य सरकार द्वारा मुख्यमंत्री मंगला पशु/कामधेनु योजना के अन्तर्गत चयनित पशुपालक के अधिकतम दो पशुओं का बीमा किया जा रहा है।
- प्रत्येक ग्राम पंचायत स्तर पर पशु अस्पताल खोला गया है।
- जिले में पशुपालकों के पशुओं का उपचार घर पर करने के लिये 8 मोबाइल एम्बुलेंस शुरू की गईं हैं। इसके टोल फ्री नं. 162 पर फोन करते ही घर बैठे पशुओं का इलाज हो रहा है।

उपरोक्त योजनाओं के अतिरिक्त राज्य सरकार मिड–डे–मील योजना के अन्तर्गत लगभग 4000 MT स्किम मिल्क पाउडर 420 रुपये प्रति किलो की दर से खरीद रही है। इससे डेरी अभियान को काफी प्रोत्साहन मिला है। देशभर में उच्चतम दूध दर किसानों को दूध खरीद मूल्य पर दी गई है, जिसके लिए हम आभारी हैं। इसके अतिरिक्त संघ द्वारा विगत 35 वर्षों में पशुपालकों को बाड़े में आग लगने पर 10000 रुपये की आर्थिक सहायता, सदस्य महिलाओं द्वारा शिशुओं का जन्म होने पर 7 किलो घी, 60 साल से अधिक आयु के सदस्य की मृत्यु पर 10 हजार की आर्थिक सहायता, प्राकृतिक आपदा, दुर्घटना से दूधारू भैंस की मृत्यु पर 25000 रुपये एवं गाय की मृत्यु पर 15000 रुपये की आर्थिक सहायता के अलावा हरे चारे के बीज वितरण पर प्रतिवर्ष लगभग 30 से 50 लाख रुपये का अनुदान साथ ही

सारणी–3: वर्तमान में अजमेर दुग्ध संघ की क्षमता व गुणनियन्त्रक उपकरणों की उपलब्धता

क्र.सं.	वर्तमान क्षमता	विवरण
1	दुग्ध क्षमता	
A	प्लांट स्तर पर	8 लाख + 1.5 लाख (नया प्लांट + पुराना प्लांट)
	पाउडर प्लांट	30 MT पाउडर प्लांट
B	समिति स्तर पर	
	BMC 1 KL	23
	BMC 2 KL	283
	BMC 5 KL	14
	कुल	320
2	गुण नियन्त्रक उपकरणों की उपलब्धता	
A	प्लांट स्तर पर	विवरण
	FT 1	2
	FT 120	1
	Bac Scientific Bactoscan	1
	Food Scanner	1
	Protein Analyser	2
B	समिति स्तर पर	
	FTIR Testing Machine (Milko Screen)	373

उन्नत नस्ल के सांड व पाड़ों की खरीद पर प्रतिवर्ष 40 लाख रुपये का अनुदान दिया जाता है।

अजमेर डेरी का नया प्लांट "State of the Art" प्रौद्योगिकी पर आधारित है। अजमेर डेरी के दूध एवं घी ने प्रयागराज में आयोजित हो रहे महाकुंभ में धूम मचा रखी है। मात्र आठ दिन में लगभग 250 मीट्रिक टन घी प्रयागराज जा चुका है एवं 26 फरवरी तक आयोजित होने वाले महाकुम्भ मेले में सरस डेयरी अजमेर का घी भेजा जायेगा। इस प्रकार 500 मीट्रिक टन की भारी मांग को देखते हुए आपूर्ति की जाएगी।

किसानों को देश में दूध की दर अधिक देने से संघ में दुग्ध संकलन की मात्रा में प्रति वर्ष बढ़ोतरी हो रही है। इस वर्ष 6 लाख लीटर का लक्ष्य है तथा किसान आर्थिक रूप से सम्पन्न हो रहा है। इस सहकारिता के आन्दोलन में पशुपालकों के आत्मनिर्भर होने का अजमेर डेरी एक जीवन्त उदाहरण है। ■

पशु स्वास्थ्य

डेरी पशुओं के संक्रामक रोगों के नियंत्रण के लिए टीकाकरण और टीकाकरण का महत्व

दीपक कुमार[1], सविता कुमारी[2], संजय कुमार[3], अनिल कुमार[4],
संजीव कुमार[5], रजनी कुमारी[6]

1.सह प्राध्यापक, पशुव्याधि विज्ञान विभाग, बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय
2.सह प्राध्यापक, पशु सूक्ष्मजीवविज्ञान विभाग, बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय
3.सह प्राध्यापक, पशुपोषण विभाग, बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय
4.सह प्राध्यापक, पशु चिकित्सा विभाग पशु कॉम्प्लेक्स, बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय
5.प्राध्यापक, संजय गांधी डेयरी प्रौद्योगिकी संस्थान, पटना
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय,पटना
6.वरीय वैज्ञानिक, आईसीआर–आरसीईआर, पटना

टीकाकरण के माध्यम से रोग के जीवाणुओं के मृत या कमजोर रूप को शरीर में प्रवेश कराकर शरीर को जैविक जानकारी प्रदान की जाती है। टीका शरीर की प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया को सक्रिय करता है, जिससे टीके प्रतिरक्षा तंत्र को सिखाते हैं कि बीमारियों से रक्षा करने वाले एंटीबॉडी कैसे बनाएं। टीके से प्रतिरक्षा तंत्र को हानिकारक आक्रमणकारियों (रोगजनकों) को पहचानने और नष्ट करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। बीमारियों को पकड़ने और उनका इलाज करने की तुलना में टीकाकरण के माध्यम से इसे सीखना प्रतिरक्षा तंत्र के लिए अधिक सुरक्षित है। एक बार जब प्रतिरक्षा प्रणाली किसी बीमारी से लड़ना सीख जाती है, तो यह अक्सर जीवन भर या कई सालों तक सुरक्षा दे सकती है। इस वजह से किसी बीमारी की चपेट में आने का जोखिम और बीमारियों से होने वाली जटिलताओं का खतरा बहुत कम हो जाता है । अंग्रेज चिकित्सक डॉ. एडवर्ड जेनर ने दुनिया का पहला सफल टीका बनाया था। उन्होंने पाया कि काऊपॉक्स से संक्रमित लोग चेचक से प्रतिरक्षित थे, उन्होंने इस खोज को आगे बढ़ाया और इस खोज के आधार पर मई 1796 में 8 वर्षीय जेम्स फ़िप्स को एक दूधवाली के हाथ पर लगे काऊपॉक्स के घाव से एकत्रित पदार्थ से टीका लगाया। तब से टीकाकरण के विकास में कई उल्लेखनीय कार्य हुए।

पशु स्वास्थ्य की कुंजी–सही समय पर टीकाकरण

डेरी पशुओं में भी समय–समय पर विभिन्न बीमारियां आती रहती हैं, जिनके कारण बहुत से पशु की मृत्यु हो जाती है। किसी तरह का रोग पशुधन के स्वास्थ्य एवं उत्पादकता को मुख्य रूप से प्रभावित करने वाला कारक है। ये रोग विभिन्न प्रकार के जीवाणु, विषाणु, कवक या परजीवियों से उत्पन्न एवं प्रसारित होते हैं। इनसे बचाव के लिए टीकाकरण एक बड़ा सुरक्षा कवच है। टीका शरीर में बिना रोग उत्पन्न किए रोगनिरोधी प्रतिरक्षी का निर्माण करता है। संक्रामक

और असंक्रामक रोग पशुधन के स्वास्थ्य एवं उत्पादकता को मुख्य रूप से प्रभावित करने वाले कारक हैं। ये रोग विभिन्न प्रकार के जीवाणु, विषाणु, कवक या परजीवियों से उत्पन्न एवं प्रसारित होते हैं। संक्रामक रोग बहुत ही घातक होते हैं, जिनसे एक ही समय में बहुत बड़ा पशुधन घनत्व प्रभावित हो सकता है। संक्रामक रोगों से पशुपालकों को अत्यधिक नुकसान उठाना पड़ता है. क्योंकि इनके कारण कई बार पशु की दो–तीन दिन में ही मृत्यु हो जाती है। असंक्रामक रोग एक पशु से दूसरे पशु में संचारित नहीं होते। खुरपका–मुंहपका, गलघोंटू, ब्रूसेलोसिस, ब्लैक क्वार्टर और एंथ्रेक्स पशुओं में होने वाले कुछ प्रमुख संक्रामक रोग हैं। इन संक्रामक रोगों में से कुछ बीमारियों से बचाव हेतु टीके उपलब्ध हैं। उचित समय पर पशुओं का टीकाकरण करा देने से कई रोगों से पशुओं कई रोगों को बचाया जा सकता है।

खुरपका–मुंहपका रोग– यह एक विषाणु जनित रोग है, जिसमें पशुओं मे तेज बुखार आने के साथ ही मुंह और पैरों पर छाले बन जाते हैं। यह गाय, भैंस, भेड़, बकरी एवं सूकर प्रजातियों में होता है। इस रोग से बचाव के लिए वर्ष में दो बार (जनवरी–फरवरी एवं अगस्त–सितम्बर) टीकाकरण किया जाता है।

गलघोंटू रोग– गाय, भैंस, बकरी और भेड़ को प्रभावित करने वाला अत्यंत घातक जीवाणु जनित रोग है। तेज बुखार, मुख से लार, सांस लेने मे तकलीफ, गले से गर्र–गर्र की आवाज आना और अचानक से मृत्यु इसके प्रमुख लक्षण हैं। इस रोग से बचाव हेतु वर्ष में एक बार (मई–जून) टीकाकरण किया जाता है।

लंगड़ा बुखार (फड़सूजन)– यह गाय, भैंस, बकरी में वर्षा में होने वाला जीवाणु जनित छूतदार संक्रामक रोग है। इससे शरीर के मांसल भाग, विशेष रूप से पुट्ठों पर, गैसभरी सूजन आ जाने से पशु लंगड़ाने लगता है। इसके लक्षण इस प्रकार हैं। पशु को 105 से 106 डिग्री तक तेज बुखार, खाना–पीना एवं जुगाली बंद कर देना, विभिन्न अंगों में अकड़न आना व आंखें लाल हो जाना, पुट्ठे पर गर्म सूजन, जो बाद में ठंडी हो जाती है। सूजन को दबाने पर गैस भरी होने से चट–चट की आवाज होती। यह भी एक जीवाणु जनित रोग है, जिसका प्रसारण मिट्टी मे मौजूद स्पोर तथा संक्रमित चारे और पानी से होता है। इसमें पशुओं में तेज बुखार के साथ लंगड़ापन आ जाता है। समय पर उपचार नहीं मिलने पर रोगी पशु की मृत्यु हो सकती है। इस रोग से बचाव के लिए भी गलघोंटू रोग की भांति ही वर्ष में एक बार (मई–जून) टीकाकरण किया जाता है।

ब्रूसेलोसिस– ब्रूसेलोसिस गाय, भैंस, भेड़, बकरी, सूअर एवं कुत्तों में फैलने वाली एक संक्रामक बीमारी है। यह आनुवांशिक यानी जेनेटिक बीमारी है, जो पशुओं से मनुष्यों एवं मनुष्यों से पशुओं में फैलती है। इस बीमारी से ग्रस्त पशु का 7–9 महीने के गर्भकाल में गर्भपात हो जाता है। यह रोग पशुशाला में बड़े पैमाने पर फैलने की संभावना रहती है। पशुओं में गर्भपात हो जाता है, जिससे भारी आर्थिक हानि होती है। यह बीमारी मनुष्य के स्वास्थ्य एवं आर्थिक दृष्टिकोण से भी बेहद गंभीर है। विश्व स्तर पर लगभग 5 लाख मनुष्य हर साल इस रोग से ग्रस्त हो जाते हैं। पशुओं को संक्रमित करने वाला यह जीवाणु जनित रोग है, जिससे ग्रसित होने पर पशुओं मे गर्भ के अंतिम तिमाही मे गर्भपात हो जाता है। इस रोग से बचाव के लिए राष्ट्रीय ब्रूसेला रोग नियंत्रण कार्यक्रम के अंतर्गत ब्रूसेला संभावित पशु झुण्ड में 5 से 8 माह की आयु के मादा पशुओं में ब्रूसेला स्ट्रेन–19 द्वारा टीकाकरण किया जाता है।

पशुओं में टीकाकरण से पहले इन बातों का ध्यान रखना चाहिए:

- टीकाकरण के 2–3 सप्ताह पूर्व पशुओं को कृमिनाशक दवा पिलानी चाहिए, यह बेहतर प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया के लिए आवश्यक है।
- संभावित रोग प्रकोप के एक माह पूर्व टीकाकरण किया जाना चाहिए।
- संक्रमित या रोगग्रस्त पशुओं को टीका ना लगवाएं।
- जहां तक हो सके उन्नत गर्भावस्था में टीकाकरण नहीं करना चाहिए।

टीकाकरण विफलता के आम कारण

- कमजोर और बीमार पशुओं का टीकाकरण।
- रख–रखाव और कोल्ड चेन में कमी।
- झुण्ड के सभी पशुओं में टीका न लग पाना।
- बार–बार एक ही शीशी को ठंड से बाहर निकालकर इस्तेमाल करना।

- टीके के स्ट्रेन और रोग जनक जीवाणु के स्ट्रेन के भिन्न प्रकार या उप प्रकार होने से।

विभिन्न प्रकार के टीके:

- **निष्क्रिय टीका:** इस प्रकार के टीके किसी रोगजनक को निष्क्रिय करके बनाए जाते हैं। आमतौर पर ऊंचा तापमान या फॉर्मेल्डिहाइड या फॉर्मेलिन जैसे रसायनों का उपयोग करके टीका तैयार किया जाता है। यह रोगजनक की प्रतिकृति बनाने की क्षमता को नष्ट कर देता है, लेकिन इसे "बरकरार" रखता है, ताकि प्रतिरक्षा प्रणाली अभी भी इसे पहचान सके।
- **एटेन्यूएटेड वैक्सीन:** एटेन्यूएटेड वैक्सीन कई अलग–अलग तरीकों से बनाई जा सकती है। सबसे आम तरीकों में से कुछ में बीमारी पैदा करने वाले वायरस को सेल कल्चर या जानवरों के भ्रूण (आमतौर पर चूजे के भ्रूण) की एक श्रृंखला के माध्यम से पारित करना शामिल है। जब परिणामी वैक्सीन वायरस को किसी इंसान को दिया जाता है, तो यह बीमारी पैदा करने के लिए पर्याप्त रूप से प्रतिकृति बनाने में असमर्थ होगा, लेकिन फिर भी एक प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया को उत्तेजित करेगा जो भविष्य के संक्रमण से बचाती है।
- **टॉक्सोइड वैक्सीन:** कुछ जीवाणु रोग सीधे बैक्टीरिया के कारण नहीं होते हैं, बल्कि बैक्टीरिया द्वारा उत्पादित विष के कारण होते हैं। इस प्रकार के रोगाणुओं के लिए टीकाकरण रोग के लक्षणों का कारण बनने वाले विष को निष्क्रिय करके बनाया जा सकता है। मारे गए या निष्क्रिय टीकों में इस्तेमाल किए जाने वाले जीवों या वायरस की तरह, यह फॉर्मेलिन जैसे रसायन के साथ उपचार के माध्यम से या ऊंचा तापमान या अन्य तरीकों का उपयोग करके किया जा सकता है।
- **सबयूनिट वैक्सीन:** सबयूनिट वैक्सीन प्रतिरक्षा प्रणाली से प्रतिक्रिया को उत्तेजित करने के लिए लक्ष्य रोगजनक के केवल एक हिस्से का उपयोग करती है। यह रोगजनक से एक विशिष्ट प्रोटीन को अलग करके और इसे अपने आप में एक एंटीजन के रूप में प्रस्तुत करके किया जा सकता है।
- **संयुग्मित वैक्सीन:** संयुग्मित वैक्सीन कुछ हद तक पुनः संयोजक वैक्सीन के समान है। इसे दो अलग–अलग घटकों के संयोजन का उपयोग करके बनाया जाता है। हालाँकि, संयुग्मित वैक्सीन बैक्टीरिया के कोट के टुकड़ों का उपयोग करके बनाए जाते हैं। ये कोट रासायनिक रूप से वाहक प्रोटीन से जुड़ होते हैं, और संयोजन का उपयोग वैक्सीन के रूप में किया जाता है।
- **मोनोवेलेंट या मल्टीवेलेंट वैक्सीन:** मोनोवेलेंट वैक्सीन को एक ही एंटीजन या एक ही सूक्ष्मजीव के खिलाफ प्रतिरक्षण के लिए डिजाइन किया जाता है। मल्टीवेलेंट या पॉलीवेलेंट वैक्सीन को एक ही सूक्ष्मजीव के दो या अधिक उपभेदों या दो या अधिक सूक्ष्मजीवों के खिलाफ प्रतिरक्षण के लिए डिजाइन किया जाता है।
- **हेटरोटाइपिक वैक्सीन:** हेटरोलॉगस वैक्सीन, जिन्हें 'जेनरियन वैक्सीन' के रूप में भी जाना जाता है, ऐसी वैक्सीन हैं जो अन्य जानवरों के रोगजनक हैं, जो या तो बीमारी का कारण नहीं बनते हैं या इलाज किए जा रहे जीव में हल्की बीमारी का कारण बनते हैं।
- **मैसेंजर–आरएनए वैक्सीन:** मैसेंजर–आरएनए वैक्सीन या आरएनए वैक्सीन एक नवीन प्रकार का वैक्सीन है। प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया उत्पन्न करने के लिए मैसेंजर आरएनए (एम–आरएनए) नामक अणु की एक प्रति का उपयोग करता है, जिसे लिपिड नैनोकणों जैसे वेक्टर के भीतर पैक किया जाता है।

पशुओं की सेहत सुधारकर पशुधन उत्पादन और उत्पादकता बढाने के लिए सरकार भी प्रयासरत है। माननीय प्रधानमंत्री द्वारा सितंबर, 2019 में राष्ट्रीय पशु रोग नियंत्रण कार्यक्रम लागू किया गया, जो एक केंद्रीय क्षेत्र योजना है। इसके अंतर्गत खुरपका और मुंहपका रोग और ब्रूसेलोसिस के नियंत्रण के लिए टीकाकरण किया जाता है। डेरी पशुओं को संक्रामक रोगों से बचाने के लिए टीकाकरण कराना जरूरी है। टीकाकरण से पशुओं से लोगों में तथा एक पशु से दूसरे पशु में संक्रामक बीमारियों का प्रसार रुकता है और पशुओं के स्वास्थ्य के साथ–साथ लोगों के स्वास्थ्य की भी देखभाल होती है। टीकाकरण से किसानों और उनके समुदायों को आर्थिक स्थिरता मिलती है। ■

कहानी

शरणागत

— वृंदावनलाल वर्मा

एक

रज्जब कसाई अपना रोजगार करके ललितपुर लौट रहा था। साथ में स्त्री थी, और गाँठ में दो सौ–तीन सौ की बड़ी रकम। मार्ग बीहड़ था, और सुनसान। ललितपुर काफी दूर था, बसेरा कहीं न कहीं लेना ही था। इसलिए उसने मड़पुरा–नामक गाँव में ठहर जाने का निश्चय किया। उसकी पत्नी को बुखार हो आया था, रकम पास में थी, और बैलगाड़ी किराए पर करने में खर्च ज्यादा पड़ता, इसलिए रज्जब ने उस रात आराम कर लेना ही ठीक समझा।

परंतु ठहरता कहाँ? जात छिपाने से काम नहीं चल सकता था। उसकी पत्नी नाक और कानों में चाँदी की बालियाँ डाले थी, और पैजामा पहने थी। इसके सिवा गाँव के बहुत–से लोग उसको पहचानते भी थे। वह उस गाँव के बहुत–से कर्मण्य और अकर्मण्य ढोर खरीद कर ले जा चुका था।

अपने व्यवहारियों से उसने रात–भर के बसेरे के लायक स्थान की याचना की। किसी ने भी मंजूर न किया। उन लोगों ने अपने ढोर रज्जब को अलग–अलग और लुके–छिपे बेचे थे। ठहरने में तुरंत ही तरह–तरह की खबरें फैलतीं, इसलिए सबों ने इंकार कर दिया।

गाँव में एक गरीब ठाकुर रहता था। थोड़ी–सी जमीन थी, जिसको किसान जोते हुए थे। जिसका हल–बैल कुछ भी न था। लेकिन अपने किसानों से दो–तीन साल का पेशगी लगान वसूल कर लेने में ठाकुर को किसी विशेष बाधा का सामना नहीं करना पड़ता था। छोटा–सा मकान था, परंतु उसको गाँव वाले गढ़ी के आदरव्यंजक शब्द से पुकारा करते थे, और ठाकुर को डर के मारे 'राजा' शब्द संबोधन करते थे।

शामत का मारा रज्जब इसी ठाकुर के दरवाजे पर अपनी ज्वरग्रस्त पत्नी को लेकर पहुँचा।

ठाकुर पौर में बैठा हुक्का पी रहा था। रज्जब ने बाहर से ही सलाम करके कहा, "दाऊजू, एक बिनती है।"

ठाकुर ने बिना एक रत्ती–भर इधर–उधर हिले–डुले पूछा, "क्या?"

रज्जब बोला– "मैं दूर से आ रहा हूँ। बहुत थका हुआ हूँ। मेरी औरत को जोर से बुखार आ गया है। जाड़े में बाहर रहने से न जाने इसकी क्या हालत हो जाएगी, इसलिए रात–भर के लिए कहीं दो हाथ जगह दे दी जाए।"

"कौन लोग हो?" ठाकुर ने प्रश्न किया।

"हूँ तो कसाई।" रज्जब ने सीधा उत्तर दिया। चेहरे पर उसके बहुत गिड़गिड़ाहट थी।

ठाकुर की बड़ी–बड़ी आँखों में कठोरता छा गई। बोला, "जानता है यह किसका घर है? यहाँ तक आने की हिम्मत कैसे की तूने?"

रज्जब ने आशा–भरे स्वर में कहा– "यह राजा का घर है, इसलिए शरण में आया हुआ हूँ।"

तुरंत ठाकुर की आँखों की कठोरता गायब हो गई। जरा नरम स्वर में बोला– "किसी ने तुमको बसेरा नहीं दिया है।"

"नहीं महाराज", रज्जब ने उत्तर दिया– "बहुत कोशिश की, परंतु मेरे खोटे पेशे के कारण कोई सीधा नहीं हुआ।" और वह दरवाजे के बाहर ही, एक कोने से चिपटकर बैठ गया। पीछे उसकी पत्नी कराहती, काँपती हुई गठरी–सी बनकर सिमट गई!

ठाकुर ने कहा– "तुम अपनी चिलम लिए हो?"

"हाँ, सरकार!" रज्जब ने उत्तर दिया।

ठाकुर बोला– "तब भीतर आ जाओ, और तमाखू अपनी चिलम से पी लो। अपनी औरत को भीतर कर लो। हमारी पौर के एक कोने में पड़े रहना।"

जब वे दोनों भीतर आ गए तो ठाकुर ने पूछा– "तुम कब यहाँ से उठकर चले जाओगे?" जवाब मिला– "अँधेरे में ही महाराज! खाने के लिए रोटियाँ बाँधे हैं, इसलिए पकाने की जरूरत न पडेगी।"

"तुम्हारा नाम?"

"रज्जब।"

दो

थोड़ी देर बाद ठाकुर ने रज्जब से पूछा– "कहाँ से आ रहे हो।" रज्जब ने स्थान का नाम बतलाया।

"वहाँ किसलिए गए थे?"

"अपने रोजगार के लिए।"

"काम तो तुम्हारा बहुत बुरा है।"

"क्या करूँ, पेट के लिए करना ही पड़ता है। परमात्मा ने जिसके लिए जो रोजगार नियत किया है, वही उसको करना पड़ता है।"

"क्या नफा हुआ?" प्रश्न करने में ठाकुर को जरा संकोच हुआ, और प्रश्न का उत्तर देने में रज्जब को उससे बढ़कर।

रज्जब ने जवाब दिया– "महाराज, पेट के लायक कुछ मिल गया है। यों ही।" ठाकुर ने इस पर कोई जिद नहीं की।

रज्जब एक क्षण बाद बोला, "बड़े भोर उठकर चला जाऊँगा। तब तक घर के लोगों की तबियत भी अच्छी हो जाएगी।"

इसके बाद दिन–भर के थके हुए पति–पत्नी सो गये। काफी रात गए कुछ लोगों ने एक बँधे इशारे से ठाकुर को बाहर बुलाया। एक फटी–सी रजाई ओढ़ ठाकुर बाहर निकल आया।

आगंतुकों में से एक ने धीरे से कहा– "दाऊजू, आज तो खाली हाथ लौटे हैं। कल संध्या का सगुन बैठा है।"

ठाकुर ने कहा– "आज जरूरत थी। खैर, कल देखा जाएगा।"

"क्या कोई उपाय किया था?"

"हाँ" आगंतुक बोला– "एक कसाई रुपये की मोट बाँधे इसी ओर आया है। परंतु हम लोग जरा देर में पहुँचे। वह खिसक गया। कल देखेंगे। जरा जल्दी।"

ठाकुर ने घृणा–सूचक स्वर में कहा– "कसाई का पैसा न छुएँगे।"

"क्यों?"

"बुरी कमाई है।"

"उसके रुपयों पर कसाई थोड़े ही लिखा है।"

"परंतु उसके व्यवसाय से वह रुपया दूषित हो गया है।"

"रुपया तो दूसरों का ही है। कसाई के हाथ आने से रुपया कसाई नहीं हुआ।"

"मेरा मन नहीं मानता, वह अशुद्ध है।"

"हम अपनी तलवार से उसको शुद्ध कर लेंगे।"

ज्यादा बहस नहीं हुई। ठाकुर ने सोचकर अपने साथियों को बाहर का बाहर ही टाल दिया।

भीतर देखा, कसाई सो रहा था, और उसकी पत्नी भी।

ठाकुर भी सो गया।

तीन

सवेरा हो गया, परंतु रज्जब न जा सका। उसकी पत्नी का बुखार तो हल्का हो गया था, परंतु शरीर–भर में पीड़ा थी, और वह एक कदम भी नहीं चल सकती थी।

ठाकुर उसे वहीं ठहरा हुआ देखकर कुपित हो गया। रज्जब से बोला, "मैंने खूब मेहमान इकट्ठे किए हैं। गाँव–भर थोड़ी देर में तुम लोगों को मेरी पौर में टिका हुआ देखकर तरह–तरह की बकवास करेगा। तुम बाहर जाओ। इसी समय।"

रज्जब ने बहुत विनती की, परंतु ठाकुर न माना। यद्यपि गाँव–भर उसके दबदबे को मानता था, परंतु अन्य लोकमत दबदबा उसके भी मन पर था। इसलिए रज्जब गाँव के बाहर सपत्नीक एक पेड़ के नीचे जा बैठा, और हिंदू–मात्र को मन–ही–मन कोसने लगा।

उसे आशा थी कि पहर आध–पहर में उसकी पत्नी की

तबियत इतनी स्वस्थ हो जाएगी कि वह पैदल यात्रा कर सकेगी। परंतु ऐसा न हुआ, तब उसने एक गाड़ी किराए पर कर लेने का निर्णय किया।

मुश्किल से एक चमार काफी किराया लेकर ललितपुर गाड़ी ले जाने के लिए राजी हुआ। इतने में दुपहर हो गई। उसकी पत्नी को जोर का बुखार हो आया। वह जाड़े के मारे थर–थर काँप रही थी, इतनी कि रज्जब की हिम्मत उसी समय ले जाने की न पड़ी। गाड़ी में अधिक हवा लगने के भय से रज्जब ने उस समय तक के लिए यात्रा को स्थगित कर दिया, जब तक कि उस बेचारी की कम–से–कम कँपकँपी बंद न हो जाए।

घंटे–डेढ़–घंटे बाद उसकी कँपकँपी तो बंद हो गई, परंतु ज्वर बहुत तेज हो गया। रज्जब ने अपनी पत्नी को गाड़ी में डाल दिया और गाड़ीवान से जल्दी चलने को कहा।

गाड़ीवान बोला– "दिन–भर तो यहीं लगा दिया। अब जल्दी चलने को कहते हो!"

रज्जब ने मिठास के स्वर में उससे फिर जल्दी करने के लिए कहा। वह बोला– "इतने किराए में काम नहीं चलेगा। अपना रुपया वापस लो। मैं तो घर जाता हूँ।"

रज्जब ने दाँत पीसे। कुछ क्षण चुप रहा। सचेत होकर कहने लगा, "भाई, आफत सबके ऊपर आती है। मनुष्य मनुष्य को सहारा देता है, जानवर तो देते नहीं। तुम्हारे भी बाल–बच्चे हैं। कुछ दया के साथ काम लो।"

कसाई को दया पर व्याख्यान देते सुनकर गाड़ीवान को हँसी आ गई।

उसको टस से मस न होता देखकर रज्जब ने और पैसे दिए। तब उसने गाड़ी हाँकी।

पाँच–छः मील चलने के बाद संध्या हो गई। गाँव कोई पास में न था। रज्जब की गाड़ी धीरे–धीरे चली जा रही थी। उसकी पत्नी बुखार में बेहोश–सी थी। रज्जब ने अपनी कमर टटोली, रकम सुरक्षित बँधी पड़ी थी।

रज्जब को स्मरण हो आया कि पत्नी के बुखार के कारण अंटी का कुछ बोझ कम कर देना पड़ा है, और स्मरण हो आया गाड़ीवान का वह हठ, जिसके कारण उसको कुछ पैसे व्यर्थ ही दे देने पड़े थे। उसको गाड़ीवान पर क्रोध था, परंतु उसको प्रकट करने की उस समय उसके मन में इच्छा न थी।

बातचीत करके रास्ता काटने की कामना से उसने वार्तालाप आरंभ किया, "गाँव तो यहाँ से दूर मिलेगा।"

"बहुत दूर, वहीं ठहरेंगे।"

"किसके यहाँ?"

"किसी के यहाँ भी नहीं। पेड़ के नीचे। कल सवेरे ललितपुर चलेंगे।"

"कल को फिर पैसा माँग उठना।"

"कैसे माँग उठूँगा? किराया ले चुका हूं। अब फिर कैसे माँगूगा?"

"जैसे आज गाँव में हठ करके माँगा था। बेटा, ललितपुर होता, तो बतला देता!"

"क्या बतला देते? क्या सेंत–मेंत गाड़ी में बैठना चाहते थे?"

'क्यों बे, क्या रुपये देकर भी सेंत–मेंत का बैठना कहाता है? जानता है, मेरा नाम रज्जब है। अगर बीच में गड़बड़ करेगा, तो नालायक को यहीं छुरे से काटकर कहीं फेंक दूँगा और गाड़ी लेकर ललितपुर चल दूँगा।"

रज्जब क्रोध को प्रकट नहीं करना चाहता था, परंतु शायद अकारण ही वह भली–भाँति प्रकट हो गया।

गाडीवान ने इधर–उधर देखा। अँधेरा हो गया था। चारों ओर सुनसान था। आस–पास झाड़ी खड़ी थी। ऐसा जान पड़ता था, कहीं से कोई अब निकला और अब निकला। रज्जब की बात सुनकर उसकी हड्डी काँप गई। ऐसा जान पड़ा, मानों पसलियों को उसकी ठंडी छुरी छू रही हो।

गाड़ीवान चुपचाप बैल को हाँकने लगा। उसने सोचा गाँव के आते ही गाड़ी छोड़कर नीचे खड़ा हो जाऊँगा, और हल्ला–गुल्ला करके गाँव वालों की मदद से अपना पीछा रज्जब से छुडाऊँगा। रुपये–पैसे भले ही वापस कर दूँगा, परंतु और आगे न जाऊँगा। कहीं सचमुच मार्ग में मार डाले!

गाड़ी थोड़ी दूर और चली होगी कि बैल ठिठककर खड़े हो गए। रज्जब सामने न देख रहा था, इसलिए जरा कड़ककर गाड़ीवान से बोला, "क्यों बे बदमाश, सो गया क्या?"

अधिक कड़क के साथ सामने रास्ते पर खड़ी हुई एक

टुकड़ी में से किसी के कठोर कंठ से निकला... "खबरदार, जो आगे बढ़ा।"

रज्जब ने सामने देखा कि चार–पाँच आदमी बड़े–बड़े लठ बाँधकर न जाने कहाँ से आ गए हैं। उनमें तुरंत ही एक ने बैलों की जुआरी पर एक लठ पटका और दो दाएँ–बाएँ आकर रज्जब पर आक्रमण करने को तैयार हो गए।

गाड़ीवान गाड़ी छोड़कर नीचे जा खड़ा हुआ। बोला... "मालिक मैं तो गाड़ीवान हूँ। मुझसे कोई सरोकार नहीं।"

"यह कौन है?" एक ने गरजकर पूछा।

गाड़ीवान की घिग्घी बँध गई। कोई उत्तर न दे सका।

रज्जब ने कमर की गाँठ को एक हाथ से सँभालते हुए बहुत ही नम्र स्वर में कहा, "मैं बहुत गरीब आदमी हूँ। मेरे पास कुछ नहीं है। मेरी औरत गाड़ी में बीमार पड़ी है। मुझे जाने दीजिए।"

उन लोगों में से एक ने रज्जब के सिर पर लाठी उबारी। गाड़ीवान खिसकना चाहता था कि दूसरे ने उसको पकड़ लिया।

अब उसका मुँह खुला। बोला– "महाराज, मुझको छोड़ दो। मैं तो किराए से गाड़ी लिए जा रहा हूँ। गाँठ में खाने के लिए तीन–चार आने पैसे ही हैं।"

"और यह कौन है? बतला।" उन लोगों में से एक ने पूछा।

गाडीवान ने तुरंत उत्तर दिया– "ललितपुर का एक कसाई।"

रज्जब के सिर पर जो लाठी उबारी गई थी, वह वहीं रह गई। लाठीवाले के मुँह से निकला– "तुम कसाई हो? सच बताओ!"

"हाँ, महाराज! रज्जब ने सहसा उत्तर दिया– "मैं बहुत गरीब हूँ। हाथ जोड़ता हूँ मुझको मत सताओ। मेरी औरत बहुत बीमार है। औरत जोर से कराही।

लाठीवाले उस आदमी ने अपने एक साथी से कान में कहा– "इसका नाम रज्जब है। छोड़ो। चलें यहाँ से।"

उसने न माना। बोला– "इसका खोपड़ा चकनाचूर करो दाऊजू, यदि वैसे न माने तो। असाई–कसाई हम कुछ नहीं मानते।"

"छोड़ना ही पडेगा, उसने कहा, "इस पर हाथ नहीं पसारेंगे और न इसका पैसा छुएँगे।"

दूसरा बोला– "क्या कसाई होने के डर से दाऊजू आज तुम्हारी बुद्धि पर पत्थर पड़ गए हैं। मैं देखता हूँ।" और उसने तुरंत लाठी का एक सिरा रज्जब की छाती में अडाकर तुरंत रुपया–पैसा निकाल देने का हुक्म दिया। नीचे खड़े हुए उस व्यक्ति ने जरा तीव्र स्वर में कहा, "नीचे उतर आओ। उससे मत बोलो। उसकी औरत बीमार है।"

"हो, मेरी बला से", गाड़ी में चढे हुए लठैत ने उत्तर दिया– "मैं कसाइयों की दवा हूँ।" और उसने रज्जब को फिर धमकी दी।

नीचे खड़े हुए उस व्यक्ति ने कहा, "खबरदार, जो उसे छुआ। नीचे उतरो, नहीं तो तुम्हारा सिर चकनाचूर किए देता हूँ। वह मेरी शरण आया था।"

गाडीवान लठैत झख–सी मारकर नीचे उतर आया।

नीचे वाले व्यक्ति ने कहा– "सब लोग अपने–अपने घर जाओ। राहगीरों को तंग मत करो।" फिर गाड़ीवान से बोला, "जा रे, हाँक ले जा गाड़ी। ठिकाने तक पहुँचा आना, तब लौटना। नहीं तो अपनी खैर मत समझियो। और, तुम दोनों में से किसी ने भी कभी इस बात की चर्चा कहीं की, तो भूसी की आग में जलाकर खाक कर दूँगा।"

गाड़ीवान गाड़ी लेकर बढ गया। उन लोगों में से जिस आदमी ने गाड़ी पर चढ़कर रज्जब के सिर पर लाठी तानी थी, उसने क्षुब्ध स्वर में कहा, "दाऊजू, आगे से कभी आपके साथ न आऊँगा।"

दाऊजू ने कहा, "न आना। मैं अकेले ही बहुत कर गुजरता हूँ। परंतु बुंदेला शरणागत के साथ घात नहीं करता, इस बात को गाँठ बाँध लेना।" ■

दुग्ध सरिता में विज्ञापन दें, लाभ बढ़ाएं

RATE CARD — DUGDH SARITA

Position	Rate per insertion Rs.	Inaugural Offer Rs.
Back Cover (Four Colours)*	18,000	12,000
Inside Front Cover (Four Colours)	14,400	10,000
Inside Back Cover (Four Colours)	14,400	10,000
Inside Right Page (Four Colours)	10,800	7,000
Inside Left Page (Four Colours)	9,600	6,000
Facing Spread (Four Colours)	16,800	11,000
Half Page (Four Colours)	5400	4000

* Fifth colour: extra charges will be levied. **Note: GST 5% will be applicable on the above tariff.**

TECHNICAL DETAILS

Magazine Size in cm — **Height :** 26.5 cm; **Width:** 20.5 cm
Please leave 1 cm space from all side i.e. top-bottom-left and right. For bleed size artwork, please provide 1 cm bleed from all side over and above given size of the magazine.

Terms and Conditions

- Indian Dairy Association reserves the exclusive right to reject any advertisement, whether or not the same has already been acknowledged and/or previously published.
- The advertisement material should reach the IDA House on or before the informed deadline date.
- Cancellation of advertisements is not accepted after the booking deadline has expired.
- The Association will not be liable for any error in the advertisement.
- The Association reserves the right to destroy all material after a period of 45 days from the date of issue of the last advertisement.

Artwork

The ad material may be sent through email on the ID: **ida.adv@gmail.com** in PDF & JPG **OR** CDR & JPG format only. All four colour scan should be saved as CMYK not RGB. Processing charges would be borne by the advertiser as per actuals.

Mode of Payment

100% Advance. Payment should be made through Bank Draft payable at New Delhi / Cheque payable at par / NEFT in favour of the "Indian Dairy Association" along with the Release Order. Bank details are as follows: ***Name:*** *Indian Dairy Association;* ***SB a/c No:*** *90562170000024;* ***IFSC:*** *CNRB0019009;* ***Bank:*** *Canara Bank;* ***Branch Address:*** *Delhi Tamil Sangam Building, Sector – V, R.K. Puram New Delhi.*

Contact for Ads
Mr. Narendra Kumar Pandey
Sr. Executive-Publications. Ph. (Direct): 011-26179783 M.: 9891147083

Indian Dairy Association
IDA House, Sector-IV, R.K. Puram, New Delhi-110 022
Ph.: 91-11-26165355, 26170781, 26165237
E-mail: ida.adv@gmail.com Web: www.indiandairyassociation.org

www.interdairy.in

Inter Dairy

International exhibition for complete value chain of dairy industry

December 05 - 07, 2024
Bombay Exhibition Center, Mumbai

Exhibitor Profile

- Dairy farming & farm equipment
- Veterinary
- Processing and packaging equipment
- Automation, robotics & data processing
- End of line automation and storage solutions
- Ingredients and additives
- Cold chain management, distribution and logistics
- Milk and milk products
- Financial assistance institutions
- Start ups

Concurrent Conference

Indian Dairy Association (West Zone) will organize a two-day Conference on
"Global market opportunities for Indian Dairy Sector"

In association with

INDIAN DAIRY ASSOCIATION
(West zone)

gv@vaexhibitions.com
+91 98484 50521

VA | Exhibitions

RNI No.: DELHIN/2017/74023

एशिया का सबस बड़ा मिल्क ब्राड

खुला दूध सेहत के लिए हानिकारक हो सकता है. अमूल आपके लिए लाते हैं पाश्चराइज़्ड पाउच दूध. यह शुद्ध और विटामिन्स से भरपूर होता है. इसे अत्याधुनिक मशीनों की मदद से पैक किया जाता है, इसलिए यह इंसानी हाथों से अनछुआ रहता है. अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें 011-28524336/37.

11430665HIN

Follow us: /amul.coop | /amul_coop | /amultv | /amul_india | Visit us at http://www.amul.com

प्रकाशक व मुद्रक हरिओम गुलाटी द्वारा, इंडियन डेयरी एसोसिएशन के लिए रॉयल आफसेट, ए–89/1, फेज–1, नारायणा इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली से मुद्रित व इंडियन डेयरी एसोसिएशन, आईडीए हाऊस, सेक्टर–4, आर. के. पुरम, नई दिल्ली – 110022 से प्रकाशित, सम्पादक – जगदीप सक्सेना